मासिक—

मानव मन्दिर

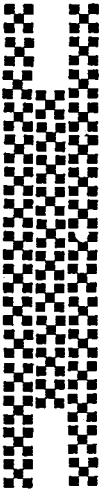

संरक्षक :

परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ३	अक्तूबर १९७६	संख्या ६

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक २९ अप्रैल १९७६ (स्थान दिल्ली)

सुन फकीर तोहि भेद सुनाऊं, शब्द योग खुल कर समझाऊं ।
सहस कमल दल रहे अनेक, इस पद में नहीं सूझे एक ।
वह विराट का रूप कहावे, दो प्रकार का शब्द सुनावे ।
ज्योति निरंजन माया ईश्वर, प्रगटे महा स्थूल रूप धर ।
सहस आंख और सहस कान हैं, सहस कला के यह स्थान हैं ।
देख विराट की अगम छवि, चित में हो प्रसन्न ।
तब त्रिकुटी की ओर चल, धर गुरु मूरत मन ।

राधास्वामी । आज गई साहिब ने कहा था कि मैं शब्द के बारे कुछ कहूं । यह शब्द हजूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रतलाल जी महाराज का है । वह फरमाते हैं कि फकीर ! तुमको भेद बताता हूं ।

सुन फकीर तोहि भेद सुनाऊं शब्द योग खुलकर जतलाऊं ।
सहस कमल दल रहे अनेक, इस पद में नहीं सूझे एक ।

सहस दल कमल वह स्थान है जिसमें अनेक वाद होता है अर्थात हमारे मन के अन्तर से अनेक विचार निकलते हैं या यूं समझो कि मन कभी कुछ सोचता है और कभी कुछ सोचता है। इस अवस्था का नाम सहस दल कमल है। हमारे मन के अन्तर से जितनी इच्छायें निकलती हैं मकान की, धन की, मान प्रतिष्ठा और पुत्रों की इसका नाम सहस दल कमल है।

यह विराट का रूप कहावे, दो प्रकार का शब्द सुनावे।

यहां घण्टा और शंख की आवाज़ होती है। यह क्यों होती है ? जिस आदमी के अन्तर सांसारिक इच्छायें हैं अर्थात स्थूल पदार्थ (Gross Matter) की इच्छायें हैं जब वह साधन करके अपने अन्तर में अपने मन को इकट्ठा करेगा तो उसके अन्तर घण्टा और शंख की आवाज़ आती है। यह है बाहर का घढ़याल। जिन आदमियों के अन्तर सांसारिक वासनायें होती हैं जब वे अपने अन्तर साधन करेंगे तो उनके अन्तर घण्टा शंख की आवाज़ आनी चाहिए। यह प्राकृतिक नियम है। अब प्रश्न यह है कि यह घण्टा शंख की आवाज़ आती क्यों नहीं है। क्योंकि मन चंचल है और ठहरता नहीं। इसलिए ये आवाजें जल्दी

आती नहीं हैं। सहस-दल-कमल के दृश्य देखने के लिए पहले सुमिरन दिया जाता है। किसका सुमिरन दिया जाता है? कोई राधास्वामी का सुमिरन देता है, कोई पांच नाम का सुमिरन बताता है और कोई राम का आदि २। जब कोई आदमी इस वर्णात्मिक नाम का अपने मन से सुमिरन करता है तो उसका मन ठहर जाता है। लेकिन कई बार या कई आदमियों का मन इतना चंचल होता है कि वह ठहरता नहीं। उसके लिए है नाम माला। आरम्भ में जब मुझ से नाम नहीं जपा जाता था तो मैं नाम से अपने मन को इकट्ठा किया करता था। जो आदमी ध्यान से नाम माला जपता है उसका मन जल्दी इकट्ठा हो जाता हैं। यह सुमिरन करने की विधि है। जो आदमी विधिपूर्वक नहीं चलते वे सफल नहीं होते। वे यह कहते हैं कि मन नहीं लगता? जब कोई चिन्ता हो या कोई डर हो। तुम आज़मा के देखो। ऐसी दशा में नाक की कोंपल पर ध्यान जमाओ और सुमिरन करो। यदि विचार से सुमिरन करोगे तो दस बीस बार सुमिरन करने से ही आंख की पुतली चढ़ जायेगी। इस अमल का नाम है त्राटक। संत इस साधन को सत्संग में ही करा देते हैं।

कैसे ? जब कोई आदमी प्रेम और श्रद्धा से सत्गुरु के दरबार में जाता है और टिकटिकी वांध कर गुरु की शकल को देखता है और आंख नहीं झपकता, उसकी वहीं समाधि लग जाती है। लोगों को सत्संग करना नहीं आता। यह बहुत अदब का काम है और बहुत दीनता का काम है। लेकिन तुम लोगों को तो सांसारिक वस्तुयें चाहिये, इसलिए तुम अभ्यास नहीं कर सकते। यह नाम हर एक के लिए नहीं है। यह तो केवल उनके लिए है।

विषयन से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीति नहीं जाके, जगत पदारथ चाह न ताके।
तन इन्द्री आशक्त न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।
विरह बान जिन हिरदे लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा।

मैं इसीलिए किसीको नाम नहीं देता क्योंकि नाम का कोई अधिकारी नहीं है। यह नाम दान साधारण लोगों के लिए नहीं है। हम गुरुओं ने तुमको तुम्हारे लिए नाम नहीं दिया। हमने अपने चेलों की संख्या बढ़ाने के लिए जो भी आया उसको नाम दे दिया बूढ़ों को भी नाम, बच्चों को भी नाम, लड़कों को नाम और लड़कियों को भी नाम। वे विचारे सारा जीवन सिर पीटते रहते हैं और कुछ प्राप्त नहीं

होता। आप लोगों ने कहा कि नाम की व्याख्या करदो। क्या व्याख्या करूं। नाम का तो कोई अधिकारी नहीं है। परमार्थ के लिए मेरे पास आता कौन है? क्योंकि आप लोगों ने प्रश्न किया है इसलिए बताये जाता हूं। मेरा अपना अनुभव है कि लोग नाम भी जपते हैं और विषय भी भोगते हैं। ऐसे आदमियों का स्वस्थ बिगड़ जाता है, भूख नहीं लगती और शरीर दुर्बल हो जाता है। मेरी भी यही हालत है। मैं बसरे बगदाद में था। बीनें सुनता था। बड़े २ प्रकाश देखता था। उस समय की मेरी फोटो देखो। मेरी आंखों में कितनी मस्ती है और कितना बड़ा चेहरा है। मैं घर में आया। काम भी भोगता था और अभ्यास भी करता था। परिणाम क्या निकला? हमारी शक्ति तो एक है चाहें नीचे से निकालते रहो और चाहे ऊपर ले जाओ। मैंने तीस साल तक न चावल खाये न अनाज खाया और न कोई दाल खाई। केवल सब्ज़ी खाता था। बाहर जाता था तो लोग कहते थे कि बाबा जी बड़ी करनी वाले हैं। अनाज नहीं खाते और मैं उनको कहा करता था कि यह मेरे कुकर्म का फल है जो

मैं अनाज नहीं खाता। इसलिए जब तक तुम साधन के नियमों पर नहीं चल सकते कभी साधन का यत्न मत करो अन्यथा तुम्हारा जीवन बरबाद हो जायेगा। मेरा जीवन बरबाद हो गया था फिर जब मुझे समझ आई तो मैंने अपने आपको सम्भाला। जिसका संस्कार और अधिकार होता है वही इस ओर आता है। आप इसका यह भाव मत समझना कि तुम गृहस्थ को जवाब दे दो। नहीं! गृहस्थ संतान पैदा करने के लिए है विषय भोगने के लिए नहीं। यदि संतान के लिए स्त्री के पास जाओ तो तुमको कोई दोष नहीं। मगर हम तो सन्तान के विचार से स्त्री के पास नहीं जाते, हम तो विषयभोग के लिए जाते हैं तो फिर ऐसे आदमी के लिए नाम की क्या आवश्यकता है। जिन लोगों को विषय विकार से ज्यादा लगाव नहीं और परमार्थ का विचार है उनको चाहिए कि वह अपनी दोनों भुवों के दरम्यान अपने विचार को इक्ट्ठा करें मगर जब तक तुम्हारा जीवन विषय विकार का है तुम्हारा विचार इक्ट्ठा होगा नहीं। इसलिए पहले अजपा जाप करो। जब तुम्हारी वृत्तियां अजपा जाप से इस स्थान पर इकट्ठी हो जायेंगी तो क्योंकि

तुम्हारे अन्तर में सांसारिक इच्छायें मौजूद हैं इसलिए तुमको पहले घण्टा और शंख सुनाई देगें। अब मैं लाख यत्न करने पर भी घण्टा और शंख नहीं सुन सकता क्योंकि मेरे अन्तर अब स्थूल पदार्थ की इच्छा नहीं है। मैंने बहुत घण्टा शंख सुने। तुम्हारी वासनाओं के अनुसार तुम्हारे अन्तर में शब्द होंगे। पंथ में यह भेद है। इसलिए कहा जाता है कि अपने अभ्यास का हाल सिवाय गुरु के और किसीको मत बताओ क्योंकि दूसरों को पता नहीं कि सचाई क्या है। गुरु अच्छी तरह जानता है और वह उसको GUIDE कर सकता है। जिस प्रकार हमारे अन्तर में जब हम विराट में पहुंच जाते हैं और हमारे अन्तर आवाज़ आती है ऐसे ही बाहर के विराट में भी आवाज़ आती है मगर क्योंकि हमारे बाहर के कान उस को सुनने के लिये उचित प्रकृति के नहीं हैं इसलिए हम उस आवाज़ को सुन नहीं सकते। बाहर हवाई जहाज़ चलता है तुम उसकी आवाज़ सुनते हो मगर बाहर के विराट की आवाज़ नहीं सुन सकते। जहां गाति है वहां आवाज़ का होना आवश्यक है। जमीन में गति होतो है उसमें से भी आवाज़ पैदा होती हैं मगर

तुम्हारे कान उसको नहीं सुन सकते क्योंकि यह कान उचित प्रकृति से नहीं बने जिससे उस आवाज को सुन सकें।

ज्योति निरंजन माया ईश्वर, प्रगटे महा स्थूल रूप धर।

यहां माया महास्थूल रूप में होती है। यहां अन्तर जब स्थूल पदार्थ (Grose Matter) प्रगट होता है तो दो शब्द सुनाई देते हैं एक घण्टा और एक शंख। हजूर दातादयाल जी महाराज मुझे फरमाते है कि फकीर ! यहां ठहरकर यहां का आनन्द लो और फिर कुछ दिन के साधन के बाद जब समझ आ जाये तो फिर आगे चलो। यह साधन केवल छः महीने का कोर्स है मगर है केवल उन लोगों के लिए जो सचाई चाहते है दूसरों को तो वर्षों लग जाते हैं। बचपन की गलतकारियों के कारण या ज्यादा, विषय भोग के कारण जिस आदमी का ब्रह्मचर्य गिरा हुआ होता है उसको साधन में कष्ट होता है। क्यों ? ईश्वर के तीन रूप हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण। हमारे अन्तर में ईश्वर का स्थूल रूप हमारा वीर्य है क्योंकि ईश्वर भी रचना करता है और हमारे वीर्य से भी रचना होती है। ईश्वर का सूक्ष्म रूप अव्याकृत है और वह है हमारा

संकल्प, वासना और इच्छा, और ईश्वर का सूक्ष्म रूप है ज्योति स्वरूप या ज्योति निरंजन जो प्रकाश स्वरूप है। जो आदमी अपने वीर्य को संतान पैदा करने की बजाय किसी और ढंग से नष्ट करता है। वह अभ्यास में सफल नहीं हो सकता। इसका प्रमाण मेरा अपना जीवन है। $13\frac{1}{2}$ साल की आयु में मेरा विवाह हुआ और $15\frac{1}{2}$ या सोलह साल की आयु में मैं गृहस्थ में फंस गया। मैं १९०५ में अठारह साल की आयु में हजूर दातादयाल जी महाराज के चरणों में गया और नाम लिया। १९१६ तक न मुझे प्रकाश आया और न शब्द आया। क्यों? क्योंकि मेरा ब्रह्मचर्य गिरा हुआ था। मैं आपको असली जीवन बता रहा हूं। सुनो! एक बार एक सेनापति Captain जिसको परमार्थ का शौक था उसने दस हजार रुपये अपने गुरु महाराज को दिये और कहने लगा कि मुझे ईश्वर के दर्शन करा दो। उनने कहा कि करा दूंगा। उसने दस हजार रुपये उसको दिये और उनकी कार दस साल तक चलाता रहा। दस साल तक उसको न प्रकाश आया और न शब्द। अन्त में दस साल के बाद उसने क्रोध में आकर अपने गुरु जी महाराज पर

चालीस हज़ार रुपये का दावा कर दिया। कुछ आदमियों ने बीच बचाओ करके फैसला करा दिया। उसके कुछ समय बाद वह Captain और आदमी को साथ लेकर मेरे मकान पर आया और शेखी मारने लगा कि मैंने यह किया और वह किया। मैंने उसको देखा और कहा कि तुम्हारे अन्तर न शब्द आ सकता है और न प्रकाश। उसने कहा कि क्यों ? मैंने कहा कि तुम्हारा विवाह नहीं हुआ और तुम अपने हाथ से अपना वीर्य नष्ट करते हो। उसने इस बात को मान लिया। मैंने उससे कहा कि ईश्वर का स्थूल रूप तुम्हारे अन्तर तुम्हारा वीर्य है। तुम उसको नष्ट करते हो और फिर यह आशा करते हो कि तुम्हारें अन्तर प्रकाश आ जाये। यह कैसे हो सकता है ? वह कहने लगा कि महाराज ! यह बात मुझे आज तक किसी ने बताई नहीं। मैंने कहा कि इस बात का मैं जिम्मेदार नहीं हूं।

मैंने अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहा है। मैं सच कहता हूं कि आजकल कोई गुरु तुमको सच्ची बात नहीं बताता। मैं यह बात किसीके खण्डन के विचार से नहीं कहता, मैं सच्चाई वर्णन कर रहा

हूं। सब तुमको अन्धाधुन्ध अपने जाल में फसाकर अपने चेले बनाने की कोशिश कर रहे हैं और तुम्हारे जीवन बरबाद कर रहे हैं। दूसरी बात और सुनो। तुम लोगों को गुरु पर विश्वास नहीं है। इसका प्रमाण देता हूं। अम्बाला का एक ठेकेदार जोकि एक गुरु का चेला था एक बार मेरे मकान पर आया। मैंने पूछा कि क्यों आये हो ? वह कहने लगा कि पन्द्रह साल हो गये नाम लिए हुये न प्रकाश आया और न शब्द। मैंने उससे कहा कि एक तो तुमको Heart trouble (दिल की बिमारी) है दूसरे तुमको शूगर की बीमारी है और तीसरे तुमको गुरु पर विश्वास नहीं है इसलिए तुम्हारे अन्तर प्रकाश और शब्द नहीं हो सकता। यह कहकर मैं टट्टी चला गया। जब मैं वापिस आया तो वह रो रहा था। उसने कहा कि आपने जो कुछ कहा ठीक है। इसलिए यह मेरा अनुभव है कि जिन लोगों को जरयान है या शूगर की बीमारी है या जिन स्त्रीयों को लकोरिया की बीमारी है उनके अन्तर न प्रकाश होता है और न उनके अन्तर शब्द खुलता है। मैं भाषण दिये जा रहा हूं। पहले अपनी २ ज़मीरों को टटोलो और फिर मेरे

साथ बात करो। उस ठेकेदार ने कहा कि मेरे गुरुजी महाराज पर मेरा विश्वास बहुत कम था। जिसका कारण यह था कि जब बाबा जी महाराज S. D. O. थे तो मैं उनके पास ठेकेदार था और उनको कमीशन दिया करता था और वह मुझसे कमीशन की रकम लेकर अपने पास नहीं रखते थे अपने गुरु को और डेरे में दे देते थे। तो मेरे दिल में यह बात आया करती थी कि मैं तो इनको रिशवत दिया करता था और अब यह गुरु बन गये हैं इसलिए उनपर मेरा विश्वास कम हो जाता था। इस वास्ते जिन लोगों का गुरु पर विश्वास पूर्ण नहीं है और वे गुरु में अवगुण देखते हैं वे लाख सिर पटक कर मर जायें उनको शान्ति नहीं मिल सकती। मैं रास्ता साफ किये जा रहा हूं। घई साहिब ! जब तक तुम गुरु पूर्ण नहीं मानते केवल बाबा सावनसिंह जी महाराज समझते हो या बाबा फकीर समझते हो तुम्हारे दिल में तो ऐसी बातें आयेंगी ही।

मैंने एक बार सत्संग में कहा कि जो आदमी श्री कृष्ण जी का ध्यान करते हैं वे अपने काम-अंग को रोक नहीं सकते। वहां एक ज्योतिष बैठा था जो

कृष्ण जी का बहुत बड़ा भक्त था और दुसरे आदमी का मैं नाम नही लेना चाहता, वह कृष्ण जी महाराज की मूर्ति के सामने नाचा करता था। उसकी बाबत यह प्रसिद्ध था कि वह बहुत कामीं आदमी है। उसको मेरी बात पर क्रोध आया और कहने लगा कि महाराज ! आप यह क्या कह रहे हैं ? मैंने कहा कि पहले अपनी जमीर को पूछो कि क्या तुम अपने काम अंग को रोक सकते हो ? कहने लगा कि नहीं। अब तुम यह सोचो कि इसका कारण क्या है। वे उस कृष्ण को पूजते हैं जो मथुरा या गोकल में पैदा हुये और गोपियों के साथ रास रचाई और उनकी इतनी रानियें थीं। जिन लोगों का कृष्ण जी के बारे यह दृष्टिकोण है और वे उनका ध्यान करते हैं वे अपने काम-अंग को नहीं रोक सकते। बार २ कहा जाता है कि जो कुछ गुरु कहता है वह करो और जो कुछ गुरु ने किया है वह मत करो। अभ्यास उनका बनता है जिनके आचरण ठीक होते हैं और जिनका गुरु पर दृढ़ विश्वास होता है। जिनका विश्वास नहीं होता उनके काम नहीं बनते। मैं एक दो दिन यहां रहूंगा और इस मज़मून को पूरा कर जाऊंगा फिर तुम अपनी

कमज़ोरियों को ओप देखो और उनको दूर करने का यत्न करो।

ज्योति निरजंन माया ईश्वर, प्रगटे महा स्थूल रूप धर।

ज्योति स्वरुप अर्थात प्रकाश में से जो धार निकलती है वह है माया। उसी का ही दूसरा रूप स्थूल है। विज्ञान सिद्ध करता है कि यह धरती किसी समय सूर्य का एक टुकड़ा थी उससे जुदा होकर जब यह ठण्डी हो गई तो धरती बन गई। आकाश से वायु प्रकट हुई वायु से अग्नि पैदा हुई, अग्नि से पानी बना और पानी से बर्फ बनती है। अब तुम देखो कि बर्फ स्थूल है लेकिन असल में आकाश स्थूल नहीं है इस प्रकार प्रकाश से जो धार निकलती है वह स्थूल रूप धारण कर लेती है। तो हज़ूर दातादयाल जी महाराज मुझे कहते हैं :--

सुन फकीर तोहि भेद सुनाऊं, शब्दयोग खुलकर जतलाऊं।
सहस कवल दल रहे अनेक, इस पद में नहीं सूझे एक।
यह विराट का रूप कहावे, दो प्रकार का शब्द सुनावे।

मुझे भाषण देना नहीं आता मगर मैं अपने दिल के भाव को अपने सादा शब्दों में वर्णन करने का यत्न कर रहा हूं। जब आदमी यहां पहुंच जाता है तो उसको अनुभव हो जाता है लेकिन यदि उसको

कोई गुरु नहीं मिला हुआ होता तो उसका यह सारा अभ्यास व्यर्थ ही चला जाता है। इसलिए साधन के साथ सत्संग का होना भी अनिवार्य है।

ज्योति निरंजन माया ईश्वर, प्रगटे महा स्थूल रूप धर॥

जिस प्रकार सूर्य का टुकड़ा यहां आकर स्थूल बन गया है ऐसे ही वह जो ज्योति निरंजन अर्थात प्रकाश, यहां आकर स्थूल रूप धारण कर लेता है।

सहस आंख और सहस कान हैं, सहस कला के यह स्थान हैं।

तुम अपने अन्तर देखो कि तुम अपनी बुद्धि से अपने किसी काम को कितने ही तरीकों से सोचते हो। यह तो बाहर की बात है और तुम अपने अन्तर में अपने विचार से किसी काम के कितने ही रौशन और तारीक पहलू देखते हो। इसका यह मतलब है।

देख विराट की अगम छवि, चित्त में हो परसन्न।
तब त्रिकुटि की ओर चल, धर गुरु मुरत मन॥

हज़ूर महाराज जी ने प्रेम बाणी में लिखा है कि यदि अभ्यास करने से तुमको खुशी, मस्ती और आनन्द मिलता है तो समझो कि तुम्हारा साधन ठीक है वरना ग़लत है। तुमने कई बार सत्संग में मुझे देखा होगा कि मैं उस समय मस्ती में होता हूं। इस समय तो मुझे वह मस्ती नहीं है क्योंकि मैं नीचे आकर बोल

रहा हूं। जब ऊपर की मंज़लों का सत्संग कराता हूं तो उस समय मेरे चेहरे पर और मेरी आंखों में नूर होता है। क्यों ? क्योंकि मैं उस समय इस स्थान को छोड़कर उस स्थान पर होता हूं। जब विराट की छवी को देखते देखते मन प्रसन्न हो जाता है तो क्योंकि मैंने अपने घर जाना है इसलिए वह फरमाते हैं कि अब त्रिकुटी में चल। त्रिकुटि में क्या है ?

त्रिकुटि पद में ओंकारा. त्रिलोकी का सार पसारा।

हमारे मन में से कोई आस लेकर विचार उठता है फिर हम उसमें आनन्द लेते हैं और फिर वह विचार खत्म हो जाता है। यह है त्रिकुटि और इसी का नाम ब्रह्मा, विष्णु और महेश। त्रिकुटि में एक तुम हो, एक प्रेम है और एक गुरु की मूर्ति है। जब यहां तुम्हारा ध्यान पक्का हो जायेगा तो तुम्हारा विचार शक्तिशाली हो जायेगा और तुम्हारी इच्छायें पूरी होती रहेंगी। जिस आदमी के अन्तर आगे जाने का जज्वा हो और उसके अन्तर सांसारिक इच्छायें न हों वह आदमी आगे जा सकता है दूसरा नहीं जा सकता।

अ-उ-म् का शब्द रसाल, धुन प्रगटे सुन चित्त संभाल।

अ-उ-म् क्या है ? बासना का उठना, ठहरना और नाश हो जाना। यही सृष्टि है। हमारे अन्तर में भी यही है और बाहर में भी यही है। बाहर का बड़ा है और हमारे अन्तर का छोटा है। अ-उ-म् जब इकट्ठे हो जाते हैं तो संकल्प विकल्प बन्द हो जाते हैं और जब मन एक स्थान पर ठहर जाता है तो उसका नाम है ओं का बिन्दु। हमारे मन की वह दशा जहां हम गुरु का ध्यान करते करते ठहर जाते हैं। उसका नाम है त्रिकुटि का स्थान।

लाली उषा दृष्टि में आई, सुरत देख देख हरषाई।

उस स्थान पर लाल रंग की रौशनी प्रकट होती है। क्यों ? सुनो। अगर मैं किसी चीज़ को ज़ोर से पकड़ूं तो ज़ोर लगने के कारण मेरे चेहरे पर लाली आ जायेगी। ऐसे ही जब तुम गुरुमूर्त बनाओगे तो तुम्हारे मन की शक्ति लगेगी। बाहर में तो मेरे शरीर का ज़ोर लगेगा और अन्तर में मन का ज़ोर लगता है। मन के अन्तर जो सूक्ष्म अनर्जी है, जब प्रेम के जज्बे में आकर गुरुमूर्त बनाने के लिए मन का ज़ोर लगता है तो वहां लाल रंग दिखाई देता है। यह है लाल

रंग का सूर्य । मुझे अपनी बावत याद है कि जब मैं इस अवस्था में था तो अभ्यास के समय मैं पसीना २ हो जाता था । अभ्यास के समय ज़ोर नहीं लगाना चाहिए । यह आप लोगों को नुकते बता रहा हूं । अभ्यास के समय शरीर को डीला छोड़ दो । यह सहजयोग है । शरीर का योग हठयोग कहलाता है । त्रिकुटि में लाल रंग का सूर्य और गुरु स्वरुप भी लाल रंग में दिखाई देता है । जो राम के पुजारी हैं उनको वहां राम की मूर्ति दिखाई देगी, जो कृष्ण के उपासक हैं उनको कृष्ण का रूप दिखाई देगा, जो हजूर सावनसिंह जी महाराज के चेले हैं उनको बाबा जी का रूप दिखाई देगा और जिन को बाबे फकीर पर विश्वास है उनको बाबे फकीर का रूप दिखाई देगा । असल में न वहां राम का रूप है न कृष्ण का रूप है, न वाबे फकीर का रूप है और न किसी और गुरु का रूप है । यह रूप तुम्हारे ही मन का विश्वास बनाता है । इस बात को परदे में रखकर तुम लोगों को लूटा जा रहा है ।

गुरु ने धारा लाल स्वरुप, श्रुति संयुक्त त्रिलोकी भूप ।

गुरु ने वहां लाल स्वरूप धारण किया । वह त्रिलोकी का भूप है । त्रिलोकी क्या है ? उत्पत्ति

स्थिति और प्रलय। विचार का पैदा होना, ठहरना और नाश होना। यह है त्रिकुटि। बाहर में भी जगह जगह त्रिकुटि है। जो ब्रह्मण्डे सो पिण्डे। जो बाहर में है वही हमारे अन्तर में है। वह भूप कैसे हुआ ? वह जो रुप तुम्हारे अन्तर प्रकट हुआ वह तो तुम्हारे ही मन का रुप है। सब संसार भूला हुआ है। मैं यह क्यों कह रहा हूं ? लोग अपने अन्तर में लाल रंग में मेरा रूप देखते हैं लेकिन मैं तो होता नहीं वह कौन है ? तुम्हारा अपना ही मन है। त्रिकुटि में गुरु का रूप है और महामुन्न से आगे सत्गुरु अपना ही प्रेम और विश्वास है। लोगों के अन्तर मेरा रूप उनकी सहायता करता है वह उनका अपना ही विश्वास और श्रद्धा है। अगर मैं यह सच्चाई वर्णन नहीं करता तो लोग इस विचार से कि बाबा जी हमारे अन्तर प्रकट होकर हमारे काम कर जाते हैं, मेरी सहायता करेंगे और मेरी सेवा करेंगे और मुझे रुपया देंगे। अगर मैं उनके इस पैसे को खा जाऊंगा तो वह पैसा मुझे खा जायेगा। गो यह मैं जानता हूं कि ऐसा कहना ठीक नहीं है। अज्ञानी अपने मन को अज्ञान के कारण जल्दी कन्ट्रोल कर सकता है और ज्ञानी सोच समझ

से चलता है। मेरी शिक्षा में यह नुक्स भी है मगर यह नुक्स इतना बुरा नहीं है जितना कि सचाई न वर्णन करने से बुरे परिणाम निकलते हैं। मजनू लैला के इश्क में अपना जीवन बरबाद कर गया हालांकि सचाई यह है कि लैला तो काले रंग की थी और मजनू का अपना ही मन लैला बना हुआ था। तो यह है त्रिकुटि का स्थान।

सत रज तम की धारा तीन, प्रगटी यहां से सुन सुन चीन्ह।

इसमें से सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की वृत्तियें निकलती हैं और इनसे सृष्टि बनती है। जो कुछ मेरी समझ में आया वह कहता हूं।

वेद धाम प्रणव दशा, सहज उदगीत का साज।
राग सुनावे अद्भुति, तीन त्रिकुटी दल साज॥

यहां पर जो ओं या मृदंग की आवाज़ पैदा होती है कोई इसको बम बम कहता है, कोई अल्लाहू कहता है और कोई वाहेगुरु कहता है। यह आवाज़ क्यों होती है? जैसे एक तीतर बोलता है तो कसाई उसकी आवाज़ को यह समझता है कि मास खरोड़े ढक रख।" बज़ाज यह समझता है कि लट्ठा मलमल अबरक।" सबज़ी बेचने वाले ने यह समझा कि "गाजर मूली अदरक" और भक्त ने यह समझा कि

"सुवहान तेरी कुदरत।" वह आवाज़ तो एक ही है लेकिन उसको सब अपने ही भावानुसार समझते हैं। जब हमारे मन की सूक्ष्म वृत्तियां ऊपर जाती हैं तो उनमें केवल नेकी और प्रेम के भाव होते हैं तो जिस प्रकार समुद्र के पानी से भाप बनती है और भाप सूक्ष्म है लेकिन जब वह भाप ऊपर जाकर रगड़ खाती है तो बादल गरजता है और विजली चमकती है, ऐसे ही अभ्यास के समय जब हमारी सूक्ष्म वृत्तियां इकट्ठी होती हैं तो उनसे जो आवाज़ पैदा होती है उस आवाज़ को कोई ओं कह देता है कोई मृदंग की आवाज़ कह देता है, कोई वाहेगुरु कह देता है और कोई अल्लाहू कह देता है। जो कुछ मुझे हज़ूर दातादयाल जी महाराज ने समझाया और जो कुछ मैंने जीवन में समझा वह बता रहा हूं। हमारे रजो-गुण, तमोगुण और सतोगुण के भाव जब अन्तर में इकट्ठे होते हैं तो लाली पैदा हो जाती है और उनके रगड़ खाने की आवाज़ बादल की गरज की सी होती है। तुम अपने अन्तर अभ्यास में रंग रूप पहाड़ दरया तालाब और कई कुछ देखते हो, क्या तुम्हारे अन्तर में पहाड़ दरया या तालाब हैं? नहीं! जो कुछ तुमने सुना हुआ है या देखा हुआ है उसका संस्कार तुम्हारे

मस्तिष्क पर पड़ा हुआ है। जिस प्रकार खुरदबीन से एक न दिखाई देने वाला कीड़ा या किटानु बड़ा दिखाई देता है ऐसे ही जब तुम अभ्यास में अन्तर जाते हो तो वह जो संस्कार या नक्श तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं वे तुमको बड़े दिखाई देते हैं।

गुरु से भेद पाय चल आगे, सुरत प्रेम के रस में पागे।

गुरु से भेद लो। तुम लोगों ने समझा हुआ है कि गु तुमको पुत्र देगा। दिवानों! जिन गुरुओं के अपने पुत्र नहीं हैं वे तुमको पुत्र कैसे दे सकते हैं। गुरु भेद देता है और चिताता हैं। इसके अतिरिक्त गुरु से यदि कोई आदमी और आशा रखता है तो वह भ्रम मैं है। यदि तुम्हारे दिल में श्रद्धा और प्रेम नहीं है तो तुम अपने अन्तर दाखिल नहीं हो सकते। इसलिए यह प्रेम मार्ग है। यदि तुम्हारा जीवन किसी पूर्ण पुरुष से जुड़ा हुआ है तब वह वरदान सिद्ध होगा और यदि किसी ऐसे गुरु से है जो सचाई वर्णन नहीं करता तो तुम्हारा सारा जीवन बरवाद हो जायेगा। खाली हाथ आये और खाली हाथ जाओगे।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ३० अप्रैल १९७६ (स्थान दिल्ली)

राधास्वामी ! कल मैंने त्रिकुटि तक वर्णन किया था, अब आगे चलो ।

वेद धाम प्रणव दशा, सहज उद्गीत का साज ।
राग सुनावे अदभुती, तीन त्रिकुटि दल साज ॥
गुरु से भेद पाय चल आगे. सुरत प्रेम के रस में पागे ।
सुन्न शिखर चढ़ ध्यान लगावे, यहां द्वेत पद रूप दिखावे ॥

राधास्वामी ! अभी मैं यहां आया, आप ने देखा कि मैं पहले अपने अन्तर चला गया । क्यों ? आप लोगों से बात चीत करते २ दिमाग में थकावट और भारीपन आ गया था, मैं अपने आप को खींच कर वहां ले गया था, जहां मन संकल्प नहीं करता । जब आदमी त्रिकुटी के मुकाम पर अभ्यास करता है तो वहां गुरु स्वरुप होता है । वह कहता है कि आगे

चल । आगे क्या होता है ? प्रकाश
करता, मगर किसी चीज़ को ने के
हैं । उस इष्ट को वह दूसर
मिल जाता है, यह है सुन्न । सुन्न म
और तुम्हारा इष्ट होता है । तुमको दुनियां की बात बताता हूं । तुम शादी करना चाहते हो । पहले सगाई होती है । शगन पड़ता है, फिर बरात जाती है, फिर लावां फेरे और शादी हो जाती है । सगाई का होना, बरात का जाना और शादी का होना यह सहसदल कंवल यानी अनेक वाद है । फिर औरत को देखने की चाह होती है फिर बराती भी चले जाते हैं फिर सब से अकेला होकर वह औरत को देखता है । यह है बाहर की अवस्था ।

इसी तरह जब आदमी अपने अन्तर में अपने इष्ट को देखता है या गुरु को या राम को या कृष्ण को या जिसको भी तुम मानते हो जब वह तुम्हारे सामने आ जाता है तो वह है सविकल्प समाधि । इसके आगे होती है निर्विकल्प समाधि, वह महासुन्न की अवस्था है ।

ध्येय ध्याता और ज्ञानी ज्ञाता, सुन्न में द्वेत भाव रहे माता ।

सूरज का रंग सफेद है लाल नहीं है लेकिन सुबह और शाम के समय बाहर के धूल धाल इत्यादि से रंग लाल मालूम होता है। इसी प्रकार आत्मा जो प्रकाश है, वह सफेद है, निर्मल है और ब्रह्म है। जब इसमें वासनाएं आ जाती हैं तो इसका रंग पीला, नीला और लाल होता है। जब मूर्ती बन जाती है और ठहर जाती है तो उस समय उसका रंग सफेद हो जाता है। फिर भी उसके अन्तर थोड़ी मैल है।

ये सविकल्प समाधि का धाम है मेरे फकीर।
योगी योग की सिद्धि से, देह की भूले पीर॥

इस अवस्था में पहुंचने से चूंकि आदमी शरीर से निकल जाता है इसलिए वह शरीर की तकलीफ को अनुभव नहीं करता। यानि सुन्न अवस्था में जाने से शरीर का भान नहीं रहता और न ही शारीरिक तकलीफ भासती है।

महा सुन्न तिस परे सुहाई. ब्रह्मरेन्द्र की चौकी भाई।
घोर अंधेरा छाया जहां. गुरु बल ले सुरत चली वहां॥

जब तुम बाहर में किसी वस्तु को लगातार टिक-टिकी बांधकर देखते हो तो देखते २ वह चीज़ लोप हो जाती है। ऐसे ही अन्तर में जब तुम बड़े प्रेम और लगन से लगातार मूरत देखते हो तो वह मूरत ओझल

हो जाती है। उस अवस्था का नाम है महासुन्न निर्विकल्प समाधि, उस अवस्था में न गुरु मूरत होती है और न प्रकाश होता है। कई आदमी निर्विकल्प समाधि में सो जाते हैं। जो आदमी निर्विकल्प समाधि में मर जाता है कबीर साहिब के कथन के अनुसार वह सांप की योनि में जाता है। निर्विकल्प समाधि भी मन की एक दशा है यहां तक सारा खेल मन का है। महासुन्न से आगे गुरु ले जाता है। पहले तो बाहर का गुरु बताता है कि ह तेरी मंजल नहीं है यह मन की समाधि है। तेरा अपना चेतन रूप इसमें विलीन हो गया है। तुम चेतन आत्मा हो। गहरी नींद में होश नहीं होती, हालांकि आत्मा-चेतन है। गहरी नींद तुम्हारी चेतन आत्मा को ढक लेती है। ऐसे ही मन की गहरी समाधि तुम्हारी रुह को या आत्मा को उठने नहीं देती।

बाहर का गुरु जीव को समझाकर वहां से निकालता है कि ये तेरी मंज़ल नहीं है। निर्विकल्प समाधि के बाद जब उत्थान होता है तो कई आदमी तो बाहर आ जाते हैं और उनको दुनियां की होश आ

हजूर दातादयाल जी महाराज ने मुझे आप लोगों की सेवा का काम सोंपा, इस काम के करने से मुझे आप लोगों से ज्ञान मिला :-

प्रत्येक आदमी के अन्तर से विचार निकलते हैं और वे ब्रह्मण्ड में रहते हैं। जो जहां का अभ्यासी होता है उसके विचार वहीं जाते हैं। जब किसी आदमी को किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तो वह उसी किसम के विचार ब्रह्मण्ड में मौजूद होते हैं वही इसकी डिमांड (*Demand*) अनुसार उसके अन्तर जाते हैं और उसकी मदद करते है। मैं नहीं जाता और न ही कोई और महात्मा जाता है। ऐसे ही *Dr. I. C. Sharma* के साथ हुआ। उसको परमार्थ की लगन थी, वह अमरीका जा रहा था, यह १९६५ की बात है। मैं देहली में सत्संग करा रहा था उसने मुझे देखा, तो मेरे पास आ गया और कहने लगा कि १९५९ में मेरे अन्तर एक महात्मा का रूप प्रकट हुआ और मुझे कहा कि इसी जन्म में तेरा काम बन जायेगा। आप वही महात्मा हैं जो मेरे अन्तर प्रगट हुए थे। बस वह मुझे गुरु मानने लग गया। मैं जानता हूं कि में नहीं गया और ना ही कोई और महात्मा जाता है जो कुछ

तुम सोचते हो वही *Rediation* ब्रह्मंड में रहती है। जब किसी को प्रबल इच्छा होती है तो वही विचार और *Rediation* उसकी मदद करती है। ऐसे ही कुकर्म करने वालों के विचार भी ब्रह्मण्ड में रहते हैं और वही विचार दूसरे कुकर्मियों की मदद करते हैं। इस समय बहुत से आदमी रूहों को बुलाते हैं।

दीवानों! कोई रूह नहीं आती। क्या किसी रुह ने आकर यह बताया है कि वह इस समय किस जिन्दगी में है और कहां है और उसकी क्या हालत है? वह केवल पिछले बीते हुए हालात बतातें हैं।

कैसे? उस रूह ने जीवन में जो कुछ किया हुआ होता है उसके वह विचार ब्रह्मण्ड में उपस्थित होते हैं और वही रूप धारण करके उसके सामने आ जाते हैं और वह बता देता है। दुनियां यह समझतो है कि वह मरा हुआ आया और यह बातें बता गया। यह मेरा अनुभव है, इसका सबूत देता हूं कि मैं श्री नगर में था, कोई आदमी मन्दिर में आया, जो अपने आप को यह कहता था कि मैं रूहों को बुला लेता हूं। मन्दिर वालों ने कहा कि अच्छा यह बताओ कि बाबा जी कब वापिस आयेंगे। उसने कहा कि बाबा जी कहते हैं कि दो दिन के बाद आऊंगा। जब मैं

मुझे आप लोगों से ज्ञान प्राप्त हुआ, अब मैं तुम्हारे चक्कर में नहीं आता। इस ज्ञान से मेरी जिन्दगी का तख्ता पलट गया, इसलिए मैं आप लोगों की कदर करता हूं।

लगी समाधि अखंड अनूप. नहि वहां परजा नहि वहाँ भूप।
निर्विकल्प पद तेही निरख, यह अद्वेत का धाम॥
साध ताहि तू सुरत से, ले ले गुरु का नाम॥

यह निर्विकल्प समाधि की अवस्था है इससे आगे निकलने के लिए तुमको चेतन होना पड़ेगा वरना उसी में फंसे रहोगे। जो ताकत तुमको वहां से निकालेगी उसका नाम गुरु है।

कसरत असनियत और वहदत. तीनो का अति भेद दें अद्भुत।

एक वाद, द्वेतवाद और अद्वेतवाद। एकपना, दोपना और तीनपना यह मन का खेल है। जब इससे ऊपर जाओगे तो वहां न एक पना न दो पना और न वहदत है। वह तुम्हारी चेतन अवस्था है।

योगी ज्ञानी ऋषि मुनि भाई।
इन तीनों में रहे लुभाई।

योगी और ज्ञानी सब मन के चक्कर में ही रहे। यहां तक सब माया है। शरीर और मन को भूल कर ओ३म् की विन्दु पर पहुंच जाना, महासुन्न की अवस्था

है। यहां से सतोगुण, तमोगुण और रजोगुण निकलते हैं और जहां पर यह ठहरते हैं, वह है ओं का स्थान।

रमैया की दुल्हन ने लूटा, बजार।
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा, तीन लोक मच गई हा-हा-कार।

रमैया की दुल्हन क्या है ? मन के जज्बात, भाव विचार, ख्यालात और आस। इन्होंने तमाम दुनियां को लूटा। ऋषिमुनि कोई भी इससे आगे नहीं गया।

ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे. नारदमुनि के परी पिछार।
श्रिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर के उदर विदार।

यह तो बाहर का काम अंग है, जिसने ये लूटे।

कनफूं का चिदाकाशी लूटे, जोगेश्वर लूटे करत विचार।

जो अपने अन्तःकरण में ठहरते हैं वह भी इस माया ने लूटे। योगी वगैरा सब ही लुट गये। जो ये कहते हैं कि हमारे अन्तर में बाबा फकीर आये या कोई और गुरु या राम या कृष्ण या कोई और देवी देवता आये। वह खुश होते हैं लेकिन उनको भी माया ने लूटा। क्योंकि मैं तो जाता नहीं, यह अनुभव मुझे तुम लोगों से ही हुआ है। इसलिए ऐ संसार के प्राणियों। मैं इस संसार में अवतार लेकर यह कहने के लिए आया हूं कि हम गुरुओं ने तुमको लूटा है। एक आदमी कोई डेरा बना लेता है और लोगों को

कहता है कि नाम ले जाओ, हम तुमको तुम्हारे अन्त समय पर आकर ले जायेंगे। लोगों ने अपनी जायदादें उनके हवाले करदीं और लुट गये। यह सब धोका है। मरते समय कई आदमियों ने कहा कि बाबा जी हमको लेने के लिए आ गये, लेकिन मैं तो जाता नहीं। यह तुम्हारा अपना ही मन है। तुम्हारा ही विश्वास काम करता है, लेकिन दूसरे महात्मा असलियत तुम लोगों को बताते नहीं। इस दशा को देखकर कुदरत ने मेरे दिमाग को हिलाया, अकाल पुरुष की ताकत मेरे दिमाग को हरकत देती है कि मैं संसार को बता जाऊं कि तुम इन गुरुओं के जाल से बचो। हमको रमैया की दुल्हन यानी माया ने लूटा है। हमको अज्ञान में रख कर हम से धन, मान और इज्जत और जायदादें लूटी गई हैं और लूटी जा रही हैं। ज्ञानी भी लुट गये। वेदान्ति कहता है कि मैं ब्रह्म हूं। वह जो "मैं" कहता है वह तो मन है। इसके सिवा कोई और नहीं।

हम तो बचि गये सहिब दया ते, शब्द डोर गहि उतरे पार।

अगर मैं यह कहदूं कि :-

हम तो बच गये सत्सगियों तुम्हारी दया से, शब्द पकड़ के हो गये पार।

तो मेरा यह कहना गलत नहीं है। लोग मेरा रूप अपने अन्तर से देखते हैं कोई कहता है कि आप पदम के फूल पर बैठे थे, हद से ज्यादा प्रकाश आप के चेहरे और आपके बालों से निकल रहा था, लेकिन मैं तो होता नहीं। तो ऐसी बातों से मेरी आंख खुली। अन्तर में भी जो दृष्य मुझे नज़र आते हैं वह दर असल हैं नहीं, सब मेरे ही मन का खेल है। तब मैंने आगे जाने की कोशिश की वरना मैं भी इसी चक्कर में फंसा रहता। चूंकि हजूर दातादयाल जी महाराज ने शिक्षा को बदल जाने का हुकम दिया था और हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने मुझे निर्भय होकर काम करने का आदेश दिया था इसलिए मैं उस सच्चाई को खोल रहा हूं जिसको आज दिन तक किसी महात्मा ने नहीं खोला। गो कबीर साहिब ने इस शब्द में खोला है, मगर इसको समझेगा कौन ? इन सन्तों की बानियों को समझने के लिए मैं आया हूं। मैं कहा करता हूं कि मैं पिछले गुज़रे हुए सन्तों की क्रिया-कर्म करता हूं। पुत्र का काम है, बाप का क्रिया-कर्म करके उसको सद गति में पहुंचाना। जो गलती उन्होंने खाई है उसको दूर किये जा रहा हूं

ताकि अगर उनकी रूह कहीं हो तो वह आज़ाद हो जाय। मैं चाहता हूं कि मेरे ये भाषण जनता में जायें और यदि मैं गलती पर हूं तो वे महा-पुरुष मेरा खंडन करें और मुझे पकड़ें। अगर यह सच्चाई आप को बता भी दी जाय तो बताओ कि क्या आप लोग मेरे पास इस सच्चाई के लिये आये हो ? आप को सन्त मत की तालीम की आवश्यकता नहीं है। आप को तो दुनियां की चीज़ें चाहिए। यह मैं अपनी ग़लती महसूस करता हूं कि मैं यह हीरे आप लोगों के सामने बखेर रहा हूं जिनकी कि आप को जरुरत नहीं।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, इस ठगनी से रहो हुश्यार।

मैं होश्यार नहीं था, इस ठगनी रूप की मुझे समझ नहीं आती थी और मैं हज़ूर दातादयाल को तंग किया करता था। एक बार १९१८ में लगातार ९ घण्टे मैंने उनको तंग किया कि मुझे वह घर दिखाओ। उन्होंने शाम को फरमाया कि अच्छा सुबह तुमको दिखला दूंगा। सुबह को उन्होंने पांच पैसे और एक नारियल मेरी झोली में डाल कर मुझे मत्था टेक दिया। अब आप सोचो कि कोई ऐसा गुरु भी है जो अपने चेले को ज्ञान देने के लिए उसके पांवों

पर सिर रख दें और फरमाया कि फकीर ! नाम दान दिया कर और सत्संग कराया कर, तुमको राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्सगियों के रूप में होंगे। अब हो गये। मैं मंजिल को समझ गया और पहुंच गया मगर अभी तक वहां ठहर नहीं सकता। मगर अभी तक मैं डरता हूं कि पता नहीं मेरा अंजाम क्या हो ? यह जो मैं सत्संग करा रहा हूं यह भी तो माया ही है। यह रमैया की दुल्हन ही तो है जो नाच नचा रही है, मगर जब तक ज़िन्दगी है जाऊंगा कहां ? यह मेरे बस की बात नहीं है।

सत चित आनन्द में ठहराई, दे बुद्धि सुरत में भरमाई।

सत, चित, आनन्द क्या है ? सत शारीरिक ऐसासात हैं, मन के संकल्प चित हैं, और आनन्द है आत्मा का आनन्द। सब इन तीनों में ही फंसे हुए हैं। और यही हजूर दातादयाल जी महाराज फरमाते हैं :-

सत है देह योगी का योग, चित है मन ज्ञानी का सोग।
आनन्द ब्रह्म सुरत की लीला, माया काल ने उसको कीला ॥

योगी योग में ही फंसा रहता है और ज्ञानी कांट छांट ही करता रहता है कि ये क्या है और वह क्या है ? कौन समझेगा संतमत को। नाम तो सभी ले लेते हैं, नाम देने वाले भी यही कहते हैं कि हम संत

हैं मगर कौन समझता है इस तालीम को और कौन इसका प्रचार करता है।

अगर इसका प्रचार किया भी जाये तो समझता कौन है ? प्रकाश में जो तुम आनन्द लेते हो वह आत्मा आनन्द है। अफसोस मुझे शब्द नहीं मिलते फिर भी मैं समझाने की कोशिश करूंगा। देखो ! एक आदमी मर कर प्रकाश में चला जाता है, प्रकाश का काम है बढ़ना और फैलना, तुम मर कर प्रकाश रूप हो गये, मगर वह प्रकाश फिर दुनियां में आ जाता है। कैसे ? कृष्ण जो ब्रह्म के अवतार थे वह इस संसार में आये उनके साथ जो ब्रह्म में रहने वाली रूहें थी वह भी गोपियें और गोप बनकर आये। ऐसे ही राम चन्द्र जो भी ब्रह्म लोक से आये उनके साथ भी ब्रह्म में रहने वाली रूहें हनुमान, सुग्रीव बन के आयीं। यही स्वामी जी महाराज ने कहा कि :-

चार खान चौपड़ जग रची, अंडजेर सेदज उदभिजी।
माया ब्रह्म पुरुष पिरकिरती, मन इच्छा खेलें शिव शक्ति॥
सुरत नर्दता में बहु पची. धूम खेल की अति कर मची।
तीन गुन्न का पासा लीन्ह. रजगुण, तमगुण. सतगुण, चीन्हा।
कर्म हाथ से पासे डारे, भोग अंक ता में विस्तारे॥
झूठी बाज़ी जानीं सच्ची, कोई पक्की कोई मारे कच्ची॥

नर्द सुरत चौरासी घर में, भरमत फिरे दुःख और सुख में।
हारे ब्रह्म और जीति माया, जीव नर्द बहु विधि दुःख पाया॥
कभि-कभि ब्रह्म जीत जो होई, नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई।
चौपड़ से बाहर नहीं होई, निजघर अपना पाये न कोई।
माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई, खेलें इन नरदन से सोई॥

इसमें माया और ब्रह्म दोनों खिलाड़ी हैं। हमेशा माया जीतती है। कभी २ ब्रह्म की जीत भी होती है। पक्की हुई गोट को खिलाड़ी बाहर निकाल लेता है, ऐसे ही सन्तों का मार्ग प्रकाश से आगे जाने और आवागमन से बचने का है। एक आदमी साधन करके प्रकाश में चला जायेगा, उसकी आत्मा परमात्मा में चली जायेगी मगर खिलाड़ी को जब फिर ज़रूरत पड़ेगी तो फिर उसको वहां से निकाल लेगा। वह आत्मा फिर जन्म ले सकती है। आवागमन से बचने के लिए सन्तों के मार्ग में शब्द योग है। यह असली शब्द योग तो त्रिलोकी से परे है। इस समय कोई कहता है राधास्वामी नाम है, कोई कहता है कि पांच नाम नाम है, कोई कुछ कहता है और कोई कुछ कहता है। लेकिन इनको पता नहीं कि ये तो वर्णात्मिक नाम हैं। वर्णात्मक नाम से मन को इकट्ठा किया जाता है। आप राम २ से मन को इकट्ठा

करो, अल्लाहू से करो या किसी भी नाम से करो मतलव तो मन को इकट्ठा करने से है। हमने महा-सुन्न से आगे जाना है, कोई समझाने वाला नहीं और कोई सच्चाई ब्यान करने वाला नहीं। हम गुरुओं ने जीवों को अपने २ मुर्गी-खाने में जकड़ा हुआ है। अगर कोई बता भी दे तो सुनता कौन है? मैं तो अपने कर्म भोगवस कहता रहता हूं।

तीनों तीनों में फंसे, सतगुरु मिला न कोय।
ये सब भूले आप में, गये भरम में खोय॥

ये सब भूल गये। सहसदल कंवल वाले भूल गये, त्रिकुटी वाले भूल गये, द्वेत और अद्वेत वाले भूल गये और प्रकाश में रहने वाले भूल गये, किसी को सत्गुरु नहीं मिला। क्या यह ग़ल्त है? नहीं। ऐ संसार वालो। मुझे किसी बात का दावा नहीं, मैं संत मत की बाणियां पढ़ा करता था, कौन आदमी है जो अपने पूर्वजों की बुराई और निन्दा सुन सकता है? इसलिए प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा, जो कुछ मेरा अनुभव होगा, वह संसार को बता जाऊंगा। हजूर दातादयाल जी महाराज ने शिक्षा को बदल जाने का हुकम दिया था और हजूर

बाबा सावन सिंह जी महाराज ने फरमाया था कि फकीर ! निर्भय होकर काम कर जाओ। मुझे किसी बात का दावा नहीं, गुरु आज्ञा बस जो समझ में आया वह कहता रहता हूं। हो सकता है मैं ग़लत हूं मेरी नीयत साफ है। मुझे तो आप सत्संगियों की बदौलत ज्ञान प्राप्त हुआ और आप लोगों ने मुझे इस चक्कर से निकाला। अब मैं उस चीज़ की तलाश करता रहता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है। वही मेरा रूप है वही मेरा आदि है। मगर वहां अभी तक ठहरा नहीं जाता।

जागृत स्वप्न सुषुप्ति तीन, सृष्टि स्थिति प्रलय चीन्ह।
कारण सूक्ष्म स्थूल को जान, जीव ईश और ब्रह्म पिछान।

ब्रह्म है प्रकाश। जीव क्या है ? जब प्रकाश शरीर में आ जाता है तो मन चित बुद्धि, अहंकार की जो फुरना है वह जीव है। जब प्रकाश स्थूल रूप में हमारे अन्तर आता है तो हमारे अन्तर में शूं शूं पैदा हो जाती है, और मन चित बुद्धि अहंकार पैदा हो जाते हैं, वह है जीव।

स्थूल सुक्षम में रहे भुलाने, नहीं कोई पहुंचा ठौर ठिकाने।

कोई नहीं पहुंचा, यही मैं समझना चाहता था कि सन्तों के पास क्या हक था जो उन्होंने सब का

खण्डन किया ? अब मैं कहता हूं कि उनके पास हक था। अब मैं उस बात का प्रमाण देता हूं। केवल एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे संत मत की असलियत का यकीन हो गया। दूसरे महात्माओं ने तुम लोगों को असलियत न बताकर तुमको अपने जाल में फंसाया, खून चूसा और तुम से नाक रगड़वाये। मैंने ऐसा नहीं किया। मुझे कौन देता है। वहां नोटों की बोरियां भरी जाती हैं। दुनियां वहां देती है जहां सब्ज बाग़ दिखाया जाता है। और सचाई नहीं।

सांचे कोई न पतीजिये, झूठे जग पतिआय।
गली २ गौ रस फिरे. मदिरा बैठ विकाय॥

आजकल सच्चे आदमी की कोई कदर नहीं करता, दुनियां मरे हुओं को पूजती है।

तुर्यातीत का भेद न जाना, तुर्यातीत का मिला न ज्ञाना।

तुरिया वह अवस्था है जहां हम मस्ती में आ जाते हैं। जब शरीर और मन के ख्यालात इकट्ठे हो जाते हैं तो हमारी खुद मस्ती की हालत आ जाती है। हमने खुदमस्ती से आगे जाना है। आप लोगों ने कई मस्त देखें होंगे, जिनको अपने आपकी कोई होश नहीं होती। यह मन की अवस्था है। हमारी मंजिल इससे बहुत आगे है।

कैसे खोल २ समझाऊं, मिथ्यावाद को केहि निधि गाऊं।

मिथ्यावाद क्या है? तुम्हारे अन्तर गुरु की मूर्ति प्रगट हो गई या राम का रूप आ गया या किसी देवी देवता का रूप प्रगट हो गया और तुम मारे खुशी के नाचने लग गये कि गुरु का दर्शन हो गया। यह मिथ्यावाद है। न राम आया न बाबा फकीर आया और न कोई और गुरु आया। यह सब मिथ्यावाद ही तो है।

देह सत और कर्म है. मन चित ही है ज्ञान।
सुरत आनन्द का रूप है, यह विचार ले मान॥

हज़ूर दातादयाल जी महाराज फरमाते हैं कि फकीर! यह असलियत है चूंकि मेरे जिम्मे डूयूटी है, इसलिए जो मैंने समझा वह बता रहा हूं। दूसरे महात्माओं को हक देता हूं कि अगर मैं गलत हूं तो मेरा खंडन करें। मैं तो गुरु का सेवक हूं उनकी आज्ञा का पालन कर रहा हूं।

यहां तक सब की गम है भाई, आगे की कोई खवर न पाई।
सुन सतगुरु का तू उपदेशा, आगे धाम में कर परवेशा॥
भंवर गूफा की खिड़की खोल, सुन सोहंग की बंसी बोल॥

सोहंग की बंसी क्या है और कैसे बजती है? यह संसार पुरुष और प्रकृति का है यानी नैगेटिव

और पौज़ेटिव से बनता है। जब ये दोनों मिलते हैं तो इनमें एक बहुत ही मामूली सी खाली जगह (शून्य स्थान) रह जाता है जब सुरत ज्ञान हासिल करके खोपड़ी में इस शून्य स्थान में से गुजरती है तो हमको बंसी की सी आवाज़ आती है। फिर भंवर गुफा बन जाती है। ये मुझे पता नहीं। ऐ सन्तो! इस संसार के सन्तो! अगर मैं गलत हूं तो मेरी रहुनमाई करो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं। भंवर गुफा क्या है? दरिया के पानी के अन्तर किसी एक जगह पर पानी का चक्कर बंध जाता है और उसमें जो चीज़ आ जाती है वह बाहर नहीं निकल सकती, उसी में चक्कर काटती रहती है। यह पानी की भंवर गुफा है। इसी प्रकार जब आदमी को यह ज्ञान हो जाता है कि यह जो कुछ अन्तर में प्रगट होता है यह सब माया है। जैसे मुझे तुम लोगों से हुआ कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता। तो मुझे यह ज्ञान होना चाहिए कि मेरे अन्तर जो फुरना होती है सब माया है। तो जब मेरे अन्तर कोई फुरना फुरेगी तो मैं इस ज्ञान से उसे फुरने नहीं दूंगा और मेरे अन्तर ही चक्कर खाती रहेगी, इस अवस्था का नाम भंवर गुफा है।

मायाकाल का भेद पिछान, तब सतगुरु का पावे ज्ञान ।

यहां पहुंच कर जब ये पता लग जाता है कि ये मेरा अपना ही संकल्प है जो मुड़-२ के इसमें चक्कर खाता है तब उसको सतगुरु का ज्ञान हो जाता है। उसको पता लग जाता है कि हकीकत क्या है ? और वह समझ जाता है कि मैं खुद ही भ्रम में आया हुआ था और अपने ही मन का चक्कर था। ऐ सत्संगियो ! इस उमर में मेरे तुम लोग सच्चे सतगुरु हो, क्योंकि मुझे तुम लोगों से यह ज्ञान मिला। गो ! दया तो हजूर दातादयाल जी महाराज की है। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, क्योंकि अब यह ज्ञान मैं तुम लोगों को दे रहा हूं इसलिए तुम मुझे सत्गुरु मानो। मैं तुम्हारी सेवा करता हूं और तुम मेरी सेवा करो। मैं तुम्हारी इज्ज़त करता हूं, तुम मेरी इज्ज़त करो। तभी तो तुम कर्जे से बरी होगे।

मन है ज्ञान चित्त मेरे भाई, बिचली दशा न जा भरमाई ॥

हजूर मुझे फरमाते हैं कि फकीर ! तूं भ्रम में मत आ। वह मुझे शब्द सुरत योग सिखला रहे हैं। जो कुछ उन्होंने मुझे बताया, वही मैं आप लोगों को बता रहा हूं।

सच्ची तुर्या यहां मिले, तुर्यातीत परख ।
दोनों की गम गुफा में, मन में अपने निरख ॥

यह सत, रज और तम का एक जगह इकट्ठा हो जाना तुरिया है। आगे जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति का इकट्ठा हो जाना, मस्ती में आना है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण विचारों का इकट्ठा हो जाना, तुरिया है। और इस इकट्ठे हुए विचारों यानीं मस्ती को छोड़ जाना तुरिया पद है। मतलब यह है कि साधन के बाद जो मस्ती आ जाती है उसको छोड़ देना ही तुरिया पद है।

चल आगे को मरद फकीर. सत पद सतगुरु पद ले धीर।

मैं मन के विचारों को छोड़ दूं, आशाओं को छोड़ दूं, मन को खो दूं बाकी हस्ती रह जायेगी। एक जिन्दगी है और एक हस्ती है और एक हस्ती से भी परे है। शरीर, मन और आत्मा का खेल ज़िन्दगी है। इन तीनों के खेल के खत्म हो जाने के बाद बाकी जो रह जाता है वह है हस्ती। उदाहरण सुनो !

बैट्री में E.M.F. है वह कायम रहती है उसमें से एक करेन्ट निकल कर सर्किट बनाती है। एक बैट्री से कई २ सर्किट बन सकते हैं कहीं लाहौर काम कर रहा है, कहीं कलकत्ता काम कर रहा है और कहीं

अम्बाला काम कर रहा है। ऐसे ही वह सतपद तमाम इनर्जी का भंडार है। तुम्हारे अन्तर तुम अनर्जी के भंडार हो। इसमें से तरह् २ के ख्यालात निकलते हैं। वह जो मरकज़ है यानी केन्द्र है वह है सत पद, अनर्जी का भंडार, उसमें से जो करेन्ट निकलती है वह अपना काम करके फिर वहीं वापिस आ जाती है सतपद में से कितने ही ब्रह्म निकलते हैं और कितनी ही दुनियां बनती है वह ज़ात अनर्जी का भंडार है। वह करेन्ट इस भंडार में आई और यहां आकर फंस गयी, गुरु मिले, भेद बताया, आगे कल कहूंगा।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर ।

दिनांक १ मई १९७६ (स्थान दिल्ली)

चल आगे को मर्द फकीर, सत पद सत्गुरु पद ले धीर।
बीन की धुन जहां प्रगटीसत २,सत पुरुष का दरस परस तत
यहां नहीं देह न गेह न माया,यहां नहीं सूरज चांद न छाया।
एक सन्त का भाव फकीरा, अलख अगम चल गहर गम्भीरा।

राधास्वामी। मेरी तकदीर अच्छी थी या बुरी में मालिक या राम की तलाश के सिलसिले में हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में पहुंच गया। उन्होंने मुझे संतमत या सुरत शब्द योग दिया था। मैं इनकी बाणियां पढ़ा करता था। दिल में जज्वा उठा करता था। मैंने आठ २ घण्टे और नौ २ घण्टे अभ्यास, यह देखने के लिए किया कि सहसदल कंवल, त्रिकुटि, सुन्न महासुन्न और भंवर गुफा क्या है। इन दरजों के बारे जो कुछ

मेरा अनुभव है मैंने पिछले दो सत्सगों में बता दिया।

सत पद का ज़िकर संत भी करते हैं, मुसलमान भी करते हैं। हिन्दुओं में भी भू, भवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम् है। मुझे नहीं पता कि सनातन धर्म वालों का या राधास्वामी मत वालों का सत्यम् क्या है ? चूंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, इसलिए कहता हूं जबसे सतगुरु स्वरुप सत्सगियों से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट हो कर उनकी मदद करता है, और मैं नहीं होता, तो मुझे यकीन हो गया कि मेरे अन्तर भी जितने रूप रंग पैदा होते हैं ये सब काल और माया है। अब मैं मन से आगे जाने की कोशिश करता रहता हूं। मन से आगे क्या है ? जो कुछ आगे है उसको अगर मैं ब्यान करूं तो कर नहीं सकता क्योंकि यह करनी का विषय है। वहां चेतनता है, प्रकाश है और शब्द है। सचखंड की बानी के बारे में मैं सुना करता था कि वहां हंस होते हैं। वहां सतपुरुष के दर्शन होते हैं सत पद के बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्यों फकीर तुमने सत्पुरुष के दर्शन किये ?

अगर नहीं किये तो तुमको बानी की हां में हां मिलाने का क्या हक है।

यहाँ नहीं देह न गेह न माया, यहां नहीं सूरज चाँद न छाया।
एक सत का भाव फकीरा ! अलख अगम चल गहर गम्भीरा।

मेरी बात को गौर से सुनना ! संत गरीब दास तो कहता है कि आगे जाने से तुमको कबीर साहब सत पुरुष के रूप में मिलते हैं। गरीब दास के चेले कहते हैं कि उनको गरीब दास सत पुरुष के रूप में मिलता है। हज़ूर महाराज रायसालिग राम साहब जी महाराज को स्वामी जी महाराज सत पुरुष के रूप में मिले। हज़ूर महाराज जी के चेलों को हज़ूर महाराज जी नज़र आते हैं। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के चेले कहते हैं कि उनको आगे हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज सतपुरुष के रूप में मिलते हैं। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चेलों को हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मिलते हैं। अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि फकीर ? तुमको आगे क्या नज़र आता है। सुनो ! जब तुम लोग अभ्यास के समय अपने अन्तर में मेरा रूप प्रकाश में देखते हो तो तुम लोग बताते हो कि आप के बालों

से नूर निकलता है। वहां नूर ही नूर होता है लेकिन मैं तो होता ही नहीं। मुझे यकीन हो गया कि जो लोग यह कहते हैं कि उनको कबीर साहिब, स्वामी जी महाराज, हजूर महाराज, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज या हजूर दातादयाल जी महाराज उनके अन्तर सत पुरुष के रूप में आते हैं। वह सत्तलोक नहीं, वह मन का लोक है, जिस प्रकार का दिमाग पर संस्कार है Impression and Suggestion पड़ा हुआ होता है। तो जब आदमी अभ्यास के समय अपने अन्तर दाखिल होता है तो दिमाग पर पड़े संस्कारों के मुताबिक उसको अन्तर में रूप नज़र आता है। सतलोक के बारे बहुत कुछ सुना। अब तो १५-२० साल से सतलोक की खोज करता रहता हूं। अब चूंकि पता लग गया कि अन्तर में प्रगट होने वाले रंग-रूप सब माया है तो अब मन छूट गया। यह स्वाभाविक ही छूटना चाहिए। क्योंकि मैं अपने आद घर जाना चाहता था। स्वामी जी महाराज ने लिखा है :-

पंचम किला तख्त सुल्तानी, बादशाह सच्चा निज जानी।

में तो अब उसको सच्चा बादशाह मानता हूं। मैंने कल भी कहा था कि वह इनर्जी का भंडार है। मैंने बैट्री की मिसाल दी थी कि E.M.F. मैं से करेन्ट

निकल कर अपना काम करती है और फिर अपने भंडार में वापिस चली जाती है। ऐसे ही उस इनर्जी के भंडार से रचना होती रहती है। कितने ही ब्रह्मा व विष्णु व महेश बनते रहते हैं और कितने ही ब्रह्मण्ड बनते रहते हैं और बिगड़ते रहते हैं। कितनी (*Destructive* और *Constructive*) उसारने और बिनाश करने वाली ताकतें बनती रहती हैं। चूंकि वह इन सब का सीक्रीट है इसलिए वह सतलोक सब का बादशाह है। यह तो मैंने ब्रह्मण्ड का ज़िकर किया है हमारे अन्तर में भी सतपुरुष की अंश है। शरीर और मन को छोड़कर हमारे अन्तर में जो चीज़ अपने आप को प्रकाशमय और शब्दमय बनती हुई देखती है यह सत पुरुष की अंश है। जहां हमारी अवस्था जब हमारा मन संकल्प नहीं करता और हमको अपने शरीर का ख्याल नहीं रहता, उस समय जो हमारा हैपना वाकी रह जाता है वह है सत पुरुष की अंश, इसी नियम के आधार पर ऊपर में भी कर्ण या लोक या सैन्टर होना चाहिए। क्यों ? हमारे शरीर के अन्तर जो कुछ भी है यह बाहर से आया हुआ है। हमारा शरीर या हमारी हड्डियां ये बाहर के विराट पुरुष

के *Vitamins and Minerals* से बनी हुई है। जो हमारी मां की खुराक द्वारा या हमारी खुराक द्वारा हमारे अन्तर आये हैं। जब तक हमारे मन पर बाहरी प्रभाव नहीं पड़ते, हमारा मन फुरना नहीं करता। हमारे अन्तर जो प्रकाश है ये भी बाहर के प्रकाश से आया हुआ है। हमारे अन्तर जो चीज़ प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह भी कहीं बाहर से आयी हुई है। इसलिए यह शरीर बाहर के ब्रह्मण्ड का नमूना है। बाहर के ब्रह्मण्ड की ही सारी प्रकृति इस शरीर में आयी हुई है। इसलिए मानना पड़ता है कि हमारे अन्तर जो सतपुरुष की अंश है वह हमारे शरीर का बादशाह है। जिस प्रकार E.M.F. बिजली का बादशाह है। ऐसे ही जब तुम प्रकाश और शब्द में होते हो और शरीर और मन को भूले हुए होते हो तो वह जो अवस्था होती है वह बादशाह है।

चली सुरत देखा मैदाना, अजब शहर अद्भुत चोगाना।

यह तो स्वामी जी महाराज को पता होगा कि उन्होंने क्या मैदान देखा ? मैंने जो समझा है वह कहने का हक रखता हूं। मैदान उस ज़मीन को कहा

जाता है जो बिल्कुल एक जैसी हो और उसमें कोई पेड़ इत्यादि न हो और सुन्दर मालूम हो। मैं जब अभ्यास में होता हूं तो मन के रंग रूप सब छूट जाते हैं, न वहां हज़ूर दातादयाल जी महाराज का सुन्दर मुखड़ा होता है और न उस समय कोई ख़्याल रहता है। केवल मेरे चेतनपने की एक हालत होती है। मैं जितना ज्यादा उसमें ठहरता हूं उतनी ही बढ़ती जाती है। चाहे उसको अपने ध्यान से लाखों मीलों की बना लूं, चाहे छोटे से छोटे दायरे में बना लूं। जैसे कि तुम अपने ख्याल को जितना जी चाहो बढ़ालो या छोटा करलो। ऐसे ही वह एक संस्कार बन जाता है दिमाग के अन्तर मैदान का। वह मैदान है या नहीं यह मुझे पता नहीं, हां वहां पर *Super most Consciuousness* की एक हालत है जिसकी लम्बाई चौड़ाई का अन्दाज़ा लगाना बहुत कठिन है। सन्तों ने इन दरजों की लम्बाई चौड़ाई बताई है कि इतने योजन है और अकल मानती है कि यह ठीक है। क्यों? तुम यहां देखो! ज़मीन से पानी का कुर्रा तीन गुणा अधिक है और पानी से हवा का कुर्रा और भी अधिक है। ऊपर कुछ दूरी के बाद हवा नहीं है। आकाश

का कुर्रा हवा से बड़ा है। विराट यानी स्थूल माद्दा के कुर्रा से सूक्ष्म माद्दा का कुर्रा बहुत बड़ा है। और कारण माद्दा यानी प्रकाश का कुर्रा और भ बहुत बड़ा है। इससे आप अनुमान लगाओ कि जो रूहानियत की चेतनता हमारे अन्तर मं है उसका कुर्रा कितना बड़ा होगा। इसलिए मानना पड़ता है कि सन्तों की बाणी रोचक है मगर इसमें सचाई है।

अमृत कुंड अमी की खाई, महल सुनहरी रचे बनाई।

आज अगर स्वामी जी महाराज होते तो मैं उनसे कहता कि आप ने यह पहेलियां लिखकर दुनियां को जंजाल में डाल दिया। लोग मर गये इन सुनहरी महलों को तलाश करते २। इसी खब्त में मैं स्वयं बारह २ घण्टें अभ्यास करता था। रात को ज़मीन पर विस्तर करके उस पर अभ्यास में चला जाता, सारी रात सोता नहीं था। मेरी हालत को देखकर एक दिन मेरी स्त्री ने मुझ से कहा कि आप सारा दिन दफ्तर में काम करते हैं और सारी रात अभ्यास करते हैं क्या मिलता है आपको ? मैंने कहा कि मैं दुनियां को भूल जाता हूं। उसने कहा कि यह तो मामूली बात है। मैं दिन को सारा दिन काम करती

हूं, खाना बनाती हूं, आपको और बच्चों को खिलाती हूं, बाल बच्चों को पालती हूं, घर के काम काज में मुझे सारा दिन फुर्सत नहीं मिलती थक जाती हूं, रात को जब सोती हूं तो मैं भी दुनियां को भूल जाती हूं। तो फिर क्या फर्क है मेरे और आप के दुनियां को भूल जाने में ? मेरे पास कोई जवाब नहीं था।

चूंकि मैंने इस धुन में सारा जीवन व्यतीत किया है इस लिए कहे जाता हूं कि अगर कोई मेरे जैसा दीवाना हो तो मेरे जीवन के ज़ाती अनुभवों से फायदा उठाये और अपना जीवन बरबाद न करे।

सन्तों ने दुनियां को Attract करने के लिए ऐसी बाणियां लिखी हैं जहां जीवों को समझ नहीं आ सकती वहां लिख दिया कि किश्वास करो। अगर कोई विश्वास नहीं करता तो उसको काफर कहा जाता है। मुसलमानों में अगर कोई कुरान शरीफ पर यकीन नहीं रखता तो वह काफर कहलाता है लेकिन अब विश्वास का ज़माना नहीं। सबूत का ज़माना है, साईंस का युग है। स्वामी जी महाराज ने तो लिख दिया है कि :-

अमृत कुंड अमी की खाई, महल सुनहरी रचे बनाई।

लेकिन मैंने वहां क्या देखा ? वहां रोशनी है। चूंकि हम लोगों को सुनहरी महल का ख्याल दिया गया है। इसलिए हम को वहां सुनहरे महल ही नज़र आएंगे। जैसा संस्कार दिमाग़ पर पड़ा हुआ होता है वही शकल आदमी को अन्तर में नज़र आती है। एक बार मैं इलाहाबाद स्टेशन पर प्लेटफार्म नं: ५ पर बैठा हुआ था। सूबेदार हजारी सिंह वहां आया और आते ही मुझे जफ्फा मार कर मेरे मूंह में अंगूर देने लग गया। मैंने पूछा कि तुम कौन हो ? उसने कहा कि क्या आप मुझे जानते नहीं हो ? आप ने दुसहरा पर मुझे नाम दिया था और आज सुबह ५ बजे आप ने मुझे मेरे मकान पर आकर कहा कि आज मैं इलाहाबाद आ रहा हूं अगर तुम मिलना चाहो तो स्टेशन पर प्लेटफार्म नं: ५ पर आ जाना। इसलिए मैं आया हूं। मैं सुन कर हैरान हो गया। मैंने कहा कि क्या तुम अभ्यास करते हो ? हां करता हूं। अन्तर में क्या देखते हो ? रोशनी के मंडल में पदम के फूल पर बैठे हुए आप को सत्संग कराते हुए देखता हूं और हजारों लोग आप का सतसंग सुनते हैं। अब मैं तो जाता नहीं, अगर जाता होता तो मुझे मालूम होना

चाहिए था, चूंकि उसने बानी में पदम के बारे में पढ़ा हुआ था और वही संस्कार उसके दिमाग़ पर पढ़ा हुआ था इसलिए उसको अन्तर में पदम नज़र आया। जो कुछ भी हम लोग अन्तर में देखते हैं वह दिमाग पर पढ़े हुए संस्कार होते हैं। अपने २ संस्कारों के मुताबिक अपने अन्तर में किसी को कबीर साहब नज़र आते हैं, किसी को स्वामी जी महाराज नज़र आते हैं, किसी को राम, कृष्ण नज़र आते हैं और किसी को बाबा फकीर नज़र आता है। दरअसल कोई भी नहीं आता। इसी वहम में हम ग्रहस्थी लोग लुट गये। किसी ने हमको सच्चाई नहीं बताई। अब रह गया अमृत कुंड। अमृत है जिन्दगी। अमृत से आदमी अमर हो जाता है। चूंकि वहां जिन्दगी है और अजर और अमर पना है इसलिए शायद स्वामी जी महाराज ने अमृत कुंड की खाई कह दिया हो। राधा-स्वामी मत वाले गुरु जो ये कहते हैं कि हम में धार आयी हुई है मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि सच्चाई क्या है ?

सच्चाई यह है कि हमारी ज़िन्दगी और हस्ती दायम और कायम है। ऊपर में वह E.M.E. यानी एनर्जी का भंडार हस्ती है और तुम्हारे अपने अन्तर

में तुम हस्ती हो । यह है अमर पद जो मैं समझता हूं । उस भंडार की जो किरन हमारे अन्तर आयी हुई है आप उसको धार कहलो या और कुछ कहलो, और वह सब में है । हो सकता है कि मैं ग़लती पर हूं । काश ! कि ये महात्मा संसार को सच्ची बात बतायें ताकि लोग सतलोक, अलख लोक, अगम लोक इन लोकों को और भंवर गुफा को तलाश करते २ पागल न होते ।

चौक चांदनी दीप अनूपा. हंसन शोभा अचरज रूपा ।

चौक चांदनी है, नूर । मैंने अपने अन्तर बहुत नूर देखे हैं । वह हंस क्या हैं ? अगर मैं यह कहूं कि वहां आदमी इस मानव शरीर में मिलते हैं तो अकल नहीं मानती । क्यों ? यह कादरी बाबा कहता है कि मैं अपने अन्तर नूर मैं बाबा फकीर, हजूर दातादयाल जी महाराज, पीर, फकीर और रसूल देखता हूं । अगर मैं इसके अन्तर जाता होता तो फिर तो मैं इसकी बात को मान लेता कि जो कुछ यह कहता है यह ठीक है । जब मैं नहीं होता तो कैसे मानू कि वहां हजूर दातादयाल जी महाराज और या कोई और इसके अन्तर में जाता है । इसलिए जो कुछ उसको अन्तर में दिखाई देता है वह इसको ख्याल मिला हुआ

है। संस्कार मिला हुआ है। इसी प्रकार एक और महात्मा ने लिखा हुआ कि जब वह अपने अन्तर अभ्यास में गया तो उसने अपने अन्तर एक जगह चार धूनियां देखीं, तीन धूनियों में तीन साधू बैठे थे और चौथी धूनी खाली थी, उन साधुओं ने कहा कि तुम इस धूनी से गये हो और यह धूनी तुम्हारी है। जो कुछ उसने अपने अन्तर देखा, वह क्या था? केवल संस्कार था। जो किसी समय उसके दिमाग पर पड़ा हुआ था। ऐसी बातें सुन कर हम अज्ञान मेंआकर साधुओं के पीछे फिरते हैं और लुट जाते हैं। शायद स्वामी जी महाराज ने हंस देखें हों मुझे पता नहीं। अगर वे आज होते तो मैं उनसे पूछता कि उन्होंने क्या देखा ? हंस क्या है ? हमारे शरीर में खून के अन्तर लाल और सफेद कीड़े हैं *Red & white Corpuscles* अगर लाल जर्म मर जायें तो शारीरिक खून पानी हो जाता है। हमारी जिन्दगी इन लाल कीड़ों पर कायम है। ऐसे ही वहां जो हमारी चेतन की जिन्दगी है वहां जो रोशनी की किरणें हैं वह हंस हैं। अगर उनको वहां से हटा दो तो सतलोक नहीं रहेगा। जैसे सूरज की एक किरण सूरज का ही रूप है। जिस तरह बड़ के बीज के अन्तर पूरा पेड़ छिपा हुआ है, ऐसे ही वहां की रोशनी के अनु हैं।

वह हंस है मैंने यह समझा है। कभी मैं भी अभ्यास में बहुत कुछ देखा करता था। एक बार मैं मकान के अन्दर अभ्यास में बैठा था, मैंने प्रकाश में स्वामी जी हाराज, हज़ूर महाराज, और हज़ूर दातादयाल जी महाराज को देखा, उन्होंने ऊपर से मुझे आवाज़ दी कि फकीर, आ जाओ। मैं फौरन बाहर निकला। वहां चांद चमक रहा था। ऊपर को देखा तो ऊपर भी वही नज़र आये। मैंने हज़ूर दातादयाल जी महाराज को लिखा कि मैंने ऐसा दृश्य देखा है। आप बताइये कि क्या आप वहां थे ? उन्होंने जवाब में लिखा कि गुरु के दो रूप होते हैं एक अन्तर और एक बाहर। वह जो अन्तर का गुरु है वह तुम को नज़र आया। अब जब लोग मेरा रूप अपने अन्तर में देखते हैं तो मेरी आंख खुली क्योंकि मैं तो किसी के अन्तर नहीं जाता। जो कुछ भी किसी को अन्तर में दिखाई देता है वह केवल संस्कार है।

ये सृष्टी बनती रहती है और बिगड़ती रहती है। यानी जिन्दगी पैदा होती रहती है। तुम एक या दो ग्राम मिट्टी ले लो, उसमें तुम्हें बगैर खुर्दबीन के कुछ नज़र नहीं आयेगा। जब खुर्दबीन से देखोगे तो वहां तुमको *Jerms* यानी कीड़ों के हजारहा मकान

नज़र आयेंगे। उस मिट्टी को सुखा दो फिर उसमें तुमको कुछ नज़र नहीं आयेगा। इससे साबित हुआ कि प्रकृति के मेल से स्थूल, सूक्ष्म और कारण सृष्टि में रचना होती रहती है और नाश होती रहती है। जैसे तुम्हारे मन से एक ख्याल उठता है और काम करता है और फिर खतम हो जाता है ऐसे ही सत-लोक में भी रचना होती रहती है। वहां की रचना क्या है ? हंस। जिस प्रकार लाल कीड़ों के होने से खुशी मिलती है और न होने से ज़िन्दगी चली जाती है, ऐसे ही वहां उन किरणों के अणुओं से हमको खुशी मिलती है इसको हम कोलाहल कहते हैं। वहां जाने से हमें खुशी और आनन्द मिलता है। असलियत यह है। लेकिन इसको बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है। जैसे आपने कभी रेडियो पर सुना होगा कि खुशी में आकर एक औरत कहती है कि मैं चांद का टिक्का अपने माथे पर लगाऊंगी, आसमान के सितारों के बुन्दे पहनूंगी, और हवा की चुनरी ओड़ कर फिर मैं अपने प्रीतम से मिलने जाऊंगी। न कोई चांद का टिक्का लगाता है, न सितारों के बुन्दे पहनता है और न ही कोई हवा की चुनरी ओड़ता है।

यह सब रोचक बातें है । असलियत जो मेरी समझ में आयी वह मैंने व्यान करदी । हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने एक जगह सतलोक का ज़िकर करते हुए फरमाया है कि वहां आनन्द ही आनन्द है । वहां खुशी मिलती है । इसके सिवा उन्होंने और कुछ नहीं लिखा । मैं अभ्यास करता हूं, इन चीजों को देखता हूं, अभी समाधि में था, कहां था? उसी आनन्द में था । प्रकाश और शब्द में था, वहां अपनी हस्ती के हैपने का आनन्द मिलता है । ऐसे ही अनुमान से बाहर में भी सतलोक का कुर्रा होना चाहिए । जैसे पानी, हवा और आकाश के कुर्रे हैं । ऐसे ही वहां सतलोक का कुर्रा बाहर में होना चाहिए । जिसको एनर्जी का भंडार कहा जाता है ।

षोड़स भान चन्द्र उजियारा, सुरत चढ़ी देखा निज द्वारा ।

वहां रोशनी बहुत है लेकिन मैंने वहां अनेक सूरज, जैसे यहां लिखा है हंस देखे हैं । मैं नहीं कह सकता कि वहां करोड़ों सूरज हैं । यह जो कुछ मेंने देखा है अपने ही दिमाग में देखा है । वहां यह हो सकता है कि अगर इन्सान की सुरत किसी खास स्थान पर जम जाये तो T.V. के असूल के मुताविक वह यहां बैठा हुआ वहां के सैंन्टर के तमाम हालात

को देख सकता है और जान सकता है। यह सम्भव हो सकता है। योगी अपने ख्याल की धार से दूसरे मुकामात का पता कर लेते हैं और देख लेते हैं। यह नहीं कि वह स्वयं जाते हैं। मैंने स्वयं कई वार परख की है। गो मेरा मार्ग सिद्धी शक्ति का नहीं है। एक बार मैं पंडित पुरुषोत्तम दास के मकान पर गया। वर्षा की वजह से उनके दरवाजे में मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर गया और कपड़े खराब हो गये।

उसकी लड़की ने मेरे कपड़े साफ किये और मेरी बहुत सेवा की। लड़की उदास नज़र आ रही थी, पूछने पर पता लगा कि इसका पति चार पांच साल से गुम है। मैंने उसकी फोटो मंगवाई और देखी। रात को मैंने अभ्यास के समय उसे तलाश करना शुरू किया और कलकत्ता में उसे एक पीले मकान के अन्दर ढूंड लिया। सुबह को मैंने कहा कि वह कलकत्ता में है और $1\frac{1}{2}$ माह तक आ जायेगा। ऐसा ही हुआ। चूंकि उस लड़की ने मेरी सेवा की इसलिए मेरे मन में उसके लिए हमदर्दी का ज़ज्बा पैदा हुआ और मैंने उसके पती को तलाश किया। यह हो सकता है कि अगर कोई आदमी अपने ख्याल से पता लगाना

चाहे तो पता लगा सकता है। मैं स्वयं नहीं करता, स्वभाविक हो जाता है। ऐसे ही गहरी समाधि के असूल के मुताबिक आदमी वहां तक के हालात मालूम कर सकता है। मेरी जिन्दगी में कई ऐसे केस गुज़रे हैं। एक बार मैं कन्नौज जा रहा था, जब कानपुर गाड़ी बदलने के लिए उतरा तो वहां लाला राम रत्न जो संत कृपाल सिंह जी का चेला था। मुझे मिलने के लिए आया और कहने लगा कि आप रेल की बजाय मेरी कार में चलें जायें, आप आराम से पहुंच जायेंगे, मैंने मंजूर कर लिया और हम कार में बैठ गये और हम पहुंच गये। वहां जाकर मुझे मालूम हुआ कि जिस बूढ़ी औरत के यहां मैंने जाना था उसने अपने लड़के से कहा कि बाबा जी कार में आ रहे हैं उनकी कार के लिए रास्ता बनाओ। उस औरत ने अपने लड़के को मेरे स्वागत के लिए उसी रास्ते पर भेजा जिस रास्ते पर हमारी कार आ रही थी।

उस औरत को किसने बताया ? जो आदमी सच्चे दिल से किसी से प्यार करता है उसके ख्याल की धार वहां तक जाती है। और जो कुछ उसके साथ होने वाला होता है उसको उस बात का ज्ञान हो

जाता है । कई औरतों के बच्चे दूर होते हैं औरतों को पता लग जाता है कि बच्चा बीमार है। यह ख्याल की फिलोसफी है। ऐसे ही यह मुमकिन है कि आदमी अपने अन्तर किसी खास सैन्टर पर इकट्ठा हो जाये तो ऊपर के सैन्टर जिस से उस सैन्टर का मेल है उसका कुछ न कुछ हाल मालूम कर लेगा। मगर यह प्रेम मुहब्बत और लगन और साधन, की वजह से होगा। इसलिए मैं यह नहीं कहता कि सन्तों की तालीम गलत है। मेरा यह मिशन नहीं है। कई बार मुझसे भी स्वभाविक हो जाता है मगर मैं जान-बूझ कर नहीं करता।

द्वार पाल जहं बैठे हंस, कहिं २ अंस कहिं २ बंस।

द्वार पालों के बारे तो स्वामी जी महाराज को पता होगा, असलियत यह है कि जो सुरत वहां गयी, उसको सतलोक का संस्कार है और द्वारपाल भी उसने वहां के सुने हुए हैं। इसलिए द्वार पालों का भी उसके दिमाग में संस्कार है। जिस प्रकार सूरज रोशनी का भंडार है और उसकी एक २ किरण उसका ही अंश है। ऐसे ही सतलोक भी प्रकाश का भंडार है उसकी जो किरण यहां से वापिस सनलोक जाती है वह भी तो प्रकाश ही है। वह वंश है। सुरत की

देह नहीं है, सुरत एनर्जी का एक अंश है। तो जब वो सुरत वहां वापिस जाती है तो उसको वहां और भी अणु मिलते हैं तो उनसे उसको खुशी मिलती है।

सहज सुरत तहं वचन सुनाये, कहो भेद तुम यहं कस आये।

यह अलंकार है कि हमारी सुरत कैसे वहां गयी? इसका वो खुद ही जवाब देते हैं।

सुरत नवीन कही तव बानी, संत मिले उन कही निशानी।

नई सुरत कहती है कि मुझे संत मिले और मुझे सतलोक जाने के लिए कहा इसलिए यहां आयी हूं। मुझे भी हजूर दातादयाल जी महाहाज ने सतलोक का ख्याल दिया था, इसलिए मैंने ऊपर जाने की कोशिश की। अगर वो मुझे यह ख्याल न देते तो मुझे क्या पता था कि कोई सतलोक भी होता है।

इतना कह तब भीतर धसी सत्तनाम दर्शन कर हंसी।

वहां पहुंच कर सुरत को आनन्द और खुशी प्राप्त होती है और प्रसन्नता मिलती है।

पुहप मध्य से उठी आवाजा, को तुम हो आये केहि काजा।

स्वामी जी को आवाज़ आयी होगी, मुझे तो कोई आवाज़ नहीं आयी। वहां मेरे अन्तर में तो मुझे यह ख्याल आया कि मैं राम को ढूंडने निकला था, मैं जब प्रकाश और शब्द में आनन्द लेता हूं तो

वहां उस चीज़ को ढूंढता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है मेरे अन्तर में। वह जो जज़्बा है उस चीज को तलाश करने का या उस चीज़ को तलाश करने की जो इच्छा है उस जज़्बे को या उस इच्छा को मैं आवाज़ समझता हूं।

सतगुरु मिले भेद सब दीन्हा, तिनकी कृपा दरस हम लीन्हा।

सतगुरु ने क्या भेद दिया ?

आप आप को आप पिछानो, कहा और का नेक न मानो।

कि ऐ फकीर। तू अपने आप को जान और अपने आप को जानने में मेरी आयु व्यतीत हो गयी। पहले मैं अपने आप को शरीर समझता था फिर अपने आप को मन समझता था, फिर अपने आप को प्रकाश और शब्द समझता था। अब उस चीज को अपना आप समझता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता।

दरशन कर अति कर मगनानी, सत्तपुरुष तब बोले बानीं।
अलख लोक का भेद सुनाया, बल अपना दे सुरत पठाया॥

आगे जाने से प्रकाश और शब्द गुम हो जाते हैं। कुछ नज़र नहीं आता जहां कुछ नज़र नहीं आता उसका नाम अलख लोक है। वहां पर मैं उस चीज़

को तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। मगर उसका पता नहीं लगता।

अलख पुरुष का रूप अनूपा. अगम पुरुष निरखा कुल भूपा।

अगम पुरुष है अनुभव। अगम नाम है ज्ञान का मुझे यह ज्ञान हुआ। ऐ भारत वर्ष के राधास्वामी मत के पैरावकारो! गुरुओ! अगर मैं ग़लत हूं तो मेरा खण्डन करो। मैं जब वहां जाता हूं तो अन्त नहीं मिलता और यदि कभी २-४ महीने में एक आधी बार मिलता है तो बहां न तू है न मैं है।

सुरत हुई अति कर मगनानी, पुरुष अनामी जाय समानी।

वहां इन्सान की अपनी हस्ती Entity खत्म हो जाती है। बाकी न मैं और न तू। न सतनाम न अनामी न गुरु न चेला। वह क्या है क्या नहीं कुछ कहा नहीं जाता।

देखा अचरज कहा न जाई. क्या २ शोभा बरनूं भाई।
तीन पुरुष और तीनों लोक, देखे सूरत पाया योग।
प्रेम बिलास जहां अति भारी, राधास्वामी कहत पुकारी।

राधास्वामी दयाल का इससे क्या भाव है यह उनको पता होगा, मैंने जो समझा वह कहा, ग़लत है या सही है इसका मुझे पता नहीं है।

एक सत्त का भान फकीरा, अलख अगम चल गहर गम्भीरा ।

हजूर दाता दयाल जी महाराज मुझे कहते हैं कि तू अलख, अगम में चल । अगम में अपने हैपने का अहसास रहता है । इससे आगे न मैं न तू न गुरु न चेला, इसके आगे समाधि लग जाती है ।

राधास्वामी अचल मुकाम, यहां मिले सांचा विश्राम ।

विश्राम कहां मिलेगा ? जहां न मैं और न तू । जब तक मैं है विश्राम कहां ?

भेद बताया मूल यह, सन्तमतें का सार ।
सत संगत अभ्यास बिन. समझ बूझ से पार ।
शब्द योग को साध कर, सुन संगत के बैन ।
तब समझेगा तत्व को, तत्व भेद है सैन ।

मैंने तत्व को क्या समझा ? सोचता हूं कि इतना ऊंचा चढ़ जाने के बाद क्या मैं कुछ कर सकता हूं ? मैं जब बीमार होता हूं तो अपनी बीमारी को दूर नहीं कर सकता । अच्छा मैं न सही दूसरे संत कुछ कर सके ? नहीं । पलटू साहब तो यह कहते थे कि जो बात ईश्वर नहीं कर सकता वह संत कर सकते हैं । उन्होंने अपनी बानी में लिखा है कि :-

साधो भाई ! हम वहां के बासी, जहां पहुंचे नहिं अविनाशी

उस पलटू साहब को दूसरे साधुओं ने जबरदस्ती उठा कर तेल के खौलते हुए कढ़ाहे में डाल कर फूंक

दिया और वो कुछ न कर सके। अगर वे कुछ कर सकते होते तो कर दिखाते। मैंने क्या समझा ? मैं चेतन का एक वुलवुला हूं। शरीर में आने से मेरे अन्तर एक 'मैं' आ गयी और मैं अपने आप को बाप, बेटा, गुरु, चेला, राजा, व फकीर वगैरा २ समझने लग गया, मन में आने से मैं अपने आपको धर्मात्मा, पापी, ज्ञानी, ध्यानी, भगत या चोर समझने लग गया। प्रकाश में आया तो मैं अपने आप को आत्मा, ब्रह्म सत अलख अगम समझने लग गया। ये जो 'मैं' मेरे अन्तर आ गयी इसने नाच नचाया। अब इस ज्ञान से मेरी 'मैं' मर गयी। मुझे समझ आ गयी कि मैं कौन हूं ? (लब खुले और बन्द हुये ये राज़े ज़िन्दगानी है) अब मुझे शान्ति कहां मिलती है ? मैं न खुदा बनता हूं, न गुरु बनता हूं न चेला, न बेटा बनता हूं न बाप, न नौकर बनता हूं न मालिक। मैं कौन हूं ? चेतन का एक वुलवुला, यह सब उस परम तत्व का खेल है। मैं कई बार हंसा करता हूं कि कई म्हात्मा अहम ब्रह्म अस्मि कहते हैं। अरे दीवाने फकीर ! तेरी हस्ती ही क्या है ? वेदान्ती

अपनी दृष्टी से कहता है कि दुनियां नहीं है। मगर दुनियां तो है। उल्लू कहता है कि सूरज नहीं है, तो उसके कहने से क्या सूरज नहीं है? शब्द योग से मुझे यह मिला कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वह बेअन्त है, मैं उसमें ऐसे रहता हूं जैसे पानी में मछली रहती है। शरीर, मन, प्रकाश और शब्द में आनन्द लेता हूं I Enjoy my Life उसकी मौज जब चाहे इस भांडे को तोड़ दे। यह मेरा अनुभव है मगर दावा नहीं। मेरे अन्तर एक 'मैं' आयी हुई थी और वह 'मैं' सब में है। इस 'मैं' की वजह से आदमी कहता है कि मैं बाप हूं बेटा हूं, मेरी जायजाद, मेरा घर, मेरा धर्म, मैं राधास्वामियां, मैं नानक पंथी या मैं कबीर पंथी। यह सब मैं ही तो है। तो तुझे सुरत शब्द योग से क्या मिला? मुझे यह मिला कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वो मालिक बेअन्त है। जब तक 'मैं' थी मैं कुछ बनता था, आप भरमा और दूसरों को भरमाता था अब दौड़ धूप खतम हो गई यहां आकर मुझे शान्ति मिल गयी सांप मर गया मगर दुंम अभी तक हिल रही है। यह मेरा प्रालब्ध

कर्म है। मरने के बाद क्या होगा ? मेरी यह इच्छा है कि मालिक मुझे ताकत दे कि मरने के बाद अगर कहीं जाऊं तो दुनिया को बता सकूं कि मैं कहां गया। इस समय तक सुरत शब्द योग से मुझे जो कुछ मिला वह मैंने बता दिया। मगर मुझे दावा किसी बात का नहीं है। मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम करता था और सचाई को जानने का इच्छुक था, अब मैं महसूस करता हूं कि वह मेरे इस प्रेम से बहुत तंग थे। जिस तरह अब मैं आप लोगों के प्रेम से तंग हूं। उन्होंने मुझे कहा कि फकीर ! चलो तुम को हजूर महाराज जी की समाधि पर आगरे ले चलूं। मैंने कहा कि चलिये महाराज ! हम दोनो स्टेशन पर गये, आगरा के दो टिकट खरीदे, जब गाड़ी आ रही थी तो हजूर ने फरमाया कि फकीर अब मुझे तुम से छुट्टी मिल जायेगी क्योंकि अब मैं तुम को वहां छोड़ आऊंगा। मैंने कहा कि मैं आप को नहीं छोड़ूंगा, इसलिए मैं नहीं जाऊंगा, टिकट वापिस कर दिये और वापिस आ गये। हजूर दाता दयाल जी महाराज एक जगह बैठ गये और मैं उनके

सामने बैठ गया। वो दृष्य मेरी नजर के सामने है मुझे फरमाया कि फकीर ! तुम इतने सालों से मेरे पास आते हो, तुम को बात की समझ नहीं आती ? मैं हज़ूर महाराज के पास केवल तीन बार गया था और बात मेरी समझ में आ गयी थी। मैंने कहा कि आपने उनसे क्या पूछा था ? फरमाया कि मैंने सवाल किया कि रचना कैसे होती है ? उन्होंने मुंह खोला और बन्द कर लिया और कहा कि यह रचना है, मैं बात को समझ गया। तुम को क्यों समझ नहीं आती ? उनको हुकम था हज़ूर महाराज जी का कि जब आओ मेरे तखत के पैरों की तरफ बैठ जाओ और मेरी तरफ देखते रहो। देखो संसार वालो। मैं न गुरु हूं और न महात्मा। मुझे तो संतमत को समझने के लिए यह काम दिया गया था। यह राज़ मुझे समझाने वाले तुम संत्सगी हो। जब से मुझे आप लोगों से यह पता चला कि मेरा रूप तुम लोगों के अन्तर प्रकट हो कर तुम्हारी मदद करता है और मैं नहीं होता तो मुझे यकीन हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रूप रंग और शकलें प्रकट होती हैं

यह सब माया है। तब मैंने आगे जाने की कोशिश की। आगे है प्रकाश और शब्द। अब उस चीज की तलाश करता रहता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है, उसका अन्त नहीं मिलता। पहले मुझे समझ नहीं आती थी। अब तुम लोगों से समझ आयी। घई साहिब ने सवाल किया था कि शब्द योग क्या है। बच्चा! मैंने जो कुछ समझा वह बता दिया। जब तक आदमी खुद किसी चीज का अनुभव न करे उसे समझ नहीं आती। मैंने शादी की, गृहस्थ भोगा और बच्चे पैदा किये, दुख तकलीफ उठाये। अब अगर मैं किसी नौजवान से कहूं कि तू शादी न करो तो क्या वह मेरी बात को सुनेगा? उसका यही इलाज है कि उसकी शादी कर दो, गृहस्थ के धक्के खायेगा, मार खायेगा, तो अनुभव के बाद स्वयं ही छोड़ देगा।

मैंने इस ख्याल से इस राज़ को खोला है कि इस समय एक पत्थर उठाओ तो १०० गुरु निकलते हैं। ये गुरु लोगों के लिए नहीं बल्कि अपने मान इज्ज़त और दौलत के लिए गुरुआयी करते हैं।

इसलिए कुदरत ने मेरे दिमाग़ को हिलाया, मैंने शब्द योग के बारे सब कुछ कह दिया।

सैन बैन को जो लखै, सोई संत फकीर।
राधास्वामी की दया, नहीं ब्यापे भव पीर।

शब्द योग से क्या मिलता है? इन्सान की भव की पीर मिट जाती है। भव है ज़िन्दगी। शारीरिक, मानसिक और अत्मिक ऐहसाजात का नाम जिन्दगी है। इससे आगे है एनर्ज़ी का भंडार उसको ज़ात कहलो आधार कहलो या अनामी कहलो। उसमें से हस्ती निकलती है, शब्द योग से मुझे क्या मिला? वह जो मेरी तड़प थी कि हाय मुझे राम मिले या मुझे शान्ति मिले, वह खत्म हो गयी। अब जिन्दा हूं मगर जिन्दा नहीं हूं। काम करता हूं मगर नहीं करता। बोलता हूं मगर नहीं बोलता। देखता हूं मगर अन्धा हूं। सुनता हूं मगर बैहरा हूं। अब ये जो शब्द मैंने प्रयोग किये हैं जिसको यह अनुभव नहीं वह तो मेरे इन शब्दों को सुनकर मुझे पागल कहेगा। तमाम सन्तों ने सैन वैन से काम लिया, मगर मैंने सचाई को यथार्थ ढंग से व्यान कर दिया है। जब से हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज से मेरा मेल हुआ, उस समय से वे अपने

सत्संगों में फरमाया करते थे कि तुम मेरी बात को नहीं सुनते, कोई डंडे मार आयेगा, जो तुमको डंडे मार कर सीधी राह पर लायेगा। वो डंडे मार मैं हूं। मगर किन के लिये ? जिनको सच्चाई की इच्छा है। आप लोगों से तो यह कहूंगा कि तुम लोग सहस दल कंवल में अभ्यास करो, तुम्हारी संसारी वासनाएं पूरी होती रहेंगी। मैं जब इन निचले दरजों का खंडन करता हूं तो उस आद अवस्था को हासिल करने के ख्याल से करता हूं। तुम इस तालीम के बगैर जिन्दगी नहीं गुज़ार सकते। सन्तों ने आखिरी मंजिल को प्राप्त करने के लिए खट चक्करों का खंडन किया है और मैं उस मंजिल को हासिल करने के लिए मन के चक्करों का भी खंडन करता हूं। मगर जिनको संसार की इच्छायें हैं उनके लिए खट चक्करों का साधन बहुत ज़रूरी है। दुनियां में उन्नति करने के लिए और मन का आनन्द लेने के लिए सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न और महासुन्न का साधन करना पड़ेगा, वरना तुम तरक्की नहीं कर सकते। इसलिए अपनी प्रकृति के मुताबिक शारीरिक साधन करो। अगर हो सके तो न्योली कर्म भी करो। मूर्ख हैं वह लोग जो

इसका खंडन करते हैं। सन्तों ने केवल आखिरी मंजिल को प्राप्त करने के लिए इनका खंडन किया है। हम को शरीर में रहते हुए शारीरिक एहसासात को भूलना बेवकूफी है। जिस वासना को लेकर कोई आदमी सहसदल कंवल का अभ्यास करेगा उसकी वह वासना पूरी होगी। यह पहली स्टेज संसार की इच्छाओं की सफलता के लिए है। त्रिकुटी में जाने से तुम्हारे मन में समझ और विवेक पैदा होगा। सुन्न में जाकर मन का आनन्द और महासुन्न में आत्मानन्द मिलता है। मैं अब तक भी सुमिरन, ध्यान करता हूं। दुनियां के काम तो तुम्हारे मन ने करने हैं। जब ऊपर चले जाओगे तो वहां तो मन नहीं होगा। हम और तुम सब दुनियां में रहते हैं, भाग कर कहां जायेंगे। इसलिए बात को समझो और सुमिरन ध्यान ज़रूर किया करो, लेकिन पंथों के झगड़ों में मत फंसो। कई लोग मुझे कहते हैं कि मैं गुरु मत के विमुख हूं लेकिन ऐसा कहने वालों को समझ नहीं है। गुरु नाम है ज्ञान का, मैं संसार को ग़लत गुरु मत की लूट से बचाना चाहता हूं। मैं लेने देने को पाप नहीं समझता। लेकिन मैं अगर तुमको सब्ज़

बाग दिखाता हूं और सच्चाई नहीं ब्यान करता तो तुम लोग जो पैसे मुझे दोगे तुम तो लुट गये। तुम बेशक अपने विश्वास की बजह से फायदा भी उठा जाओगे मगर मैं तो मारा जाऊंगा। जो कुछ मैंने कहा यह बिलकुल ठीक है।

सब को राधास्वामी !

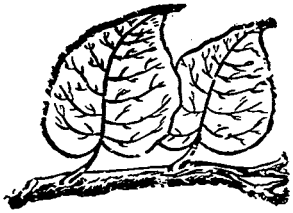

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर ।

दिनांक २ मई १९७६ स्थान दिल्ली

यह दुनियां गोरख धन्दा है, यह दुनियां ॥
जड़ में चेतन चेतन में जड़. काल फांस का फन्दा है ॥
कहीं अन्धे मिल दृष्टि पसारें, कहीं सुझाका अन्धा है ॥
माया ब्रह्मा ईश प्रकृति. द्वन्दपने का रन्दा है ॥
तत्व विवेक बिना यह प्राणी. करम भरम से गन्दा है ॥
तिमिर हिंडोले ऋषि मुनि झूले, झूले सूर और चन्दा है ॥
कल्प विकल्प ज्ञान अज्ञाना, इनमें भरमा बन्दा है ॥
राधास्वामी मेहर न हो जब जन पर, तब लग मति का मन्दा है ॥

राधास्वामी । अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्यों फकीर ! क्या तू इस गोरख धन्दे से निकल गया ? हां निकल गया । चाहे अभी तक हूं तो गोरख धन्दे में ही मगर अब यह मेरे लिये दुख का कारण नहीं है । मैं सुरत शब्द योग द्वारा निकला । सुरत शब्द योग की बड़ाई का मुझे आप लोगों की दया से पता लगा ।

जब आप लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होकर आप की हर प्रकार से सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रंग रूप और संकल्प विकल्प आते हैं यह माया है। फिर मैंने इनको छोड़ कर आगे जाने का यत्न किया। लेकिन आप संसार वालों को इस मंजल की आवश्यकता नहीं।

यहां आज मैं एक परिवार में गया। वह मुझसे बहुत प्रेम करते थे और मेरा मान करते थे। मैंने अपने आपसे पूछा कि फकीर ! लोग तुम्हारी मान प्रतिष्ठा करते हैं। तुमको खाना भी खिलाते हैं और अब तुम अमरीका जा रहे हो। क्या तुम किसी का भला कर सकते हो ? सुनो दोस्तो ! मैं अपने सत्संगों में इस गोरख धन्दे से निकलने का भेद बताता हूं। इस काम के लिए हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आदेश दिया था। गोरख धन्दा क्या है ? गोरख धन्दा यह है कि यह सृष्टि कैसे बनती है ?

काल ने जीव जन्तु जब रचे, तत्व स्थूल देह में पचे।
जल, थल, पावक, गगन समीरा. पंच करण कर धसे शरीरा।
पंचकरण कर रचा ब्रह्मण्ड, फिर वह आय बसे जीव पिंड।
पांच खंड सब न्यारा न्यारा. पाय देह का क्या पसारा।
कंठ में गगन का है स्थान, वायु हृदय में बैठक ठान।
नाभी में जठरागिनी ठहरी, इन्द्री में जल बांधी गठरी।
गुदा में पृथ्वी आन समाई, पांच चक्र की ये प्रभुताई।
देह में पांचों तत्व मिल ठहरे निज स्थान, इन चक्रों की देह है कहते संत सुजान।

यह तो धर्मो और पथों की बाणियें हैं लेकिन आज कल का ज़माना इसको नहीं मानता। हमारी उत्पत्ती कैसे होती है? हमारे बाप ने जो खुराक खाई उससे रक्त बना, रक्त से मज्जा और मज्जा से वीर्य बना। जिस प्रकार गन्दगी में अपने आप कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही वीर्य में किटानु (Spermetozoa) पैदा हो जाते हैं। वह कीड़ा मां के पेट में आया। फिर उसने स्वयं जो खुराक खाई उससे उसका शरीर बना।मां की खाई हुई खुराक से उसका शरीर बना। तो हमारा आद क्या है? आज तुम पांच छह फुट लम्बे जवान हो। सोचो कि यह तुम्हारा पिण्ड कैसे बना? खुराक से। जब तक सूर्य

की किरणें यहां न आयें कोई ख़ुराक पैदा नहीं हो सकती। इसलिए उस किटाणु में जो एनर्जी (शक्ति) है वह है प्रकाश। नूर। जो कुछ शब्द में लिखा है यह तो शास्त्र कहते हैं और यह पिछले जमाने की वर्णन शैली है मैं वर्तमान काल की वर्णन शैली लेता हूं। यह गोरख धन्दा कैसे बना? खुराक द्वारा प्रकाश हमारे अन्तर आया और जब प्रकाश शरीर में फैलने लगा तो मन चित बुद्ध हंकार पैदा हो गये। पहले वही प्रकाश उस किटाणु में सूक्ष्म रूप में था। जब शरीर बन गया तो वही प्रकाश उस रक्त द्वारा शरीर में फैल गया और मन चित बुद्ध अहंकार ने हमको भरमाया। इनके चक्कर में आ कर हम दुखी और सुखी होते हैं। यही गोरख धन्दा है। सन्त कहते हैं कि अगर सुख चाहते हो तो इस गोरख धन्दे से निकल जाओ। कैसे? जबतक तुम अपने आपको ज्ञानइन्द्रयों से हटा कर उस कीड़े की अवस्था में नहीं ले जाओगे तब तक यह गोरखधन्दा चलता ही रहेगा। मैं मौजूदा ज़माने के हालात अनुसार बता रहा हूं। इसलिए ऋषियों ने सावित्री नूर या प्रकाश का साधन बताया। हमारे मन चित

बुद्ध अहंकार का व्यवहार ही गोरख धन्दा है और हम इसके चक्कर में ही रहते हैं। व्यक्ति के जन्म का मूलकारण क्या है ? वासना, इच्छा, बाप के मस्तिष्क में इच्छा पैदा हुई उस इच्छा का संस्कार शरीर में आया और वीर्य के कीड़ों पर पड़ा। इस वासना को लेकर कीड़ा बाहर आ गया और उस वासना को लेकर ही बढ़ता गया। तो अगर हम यहां सुख से रहना चाहते हैं तो हमको अपनी वासना या इच्छा ठीक रखनी चाहिए। संसार में सुखी रहने के लिए शिव संकल्प अस्तु के नियम पर चलो और ओं के बिन्दु पर जाने का यत्न करो। आज मैं जिनके घर में गया था मैंने उनको बताया कि जिस प्रकार की वासना हमारे अन्तर पैदा होती है उसके अनुसार हमारे कर्म बनते हैं। उनको मैंने एक घटना बताई कि मेरे एक दोस्त की लड़की थी। मैं उससे आपने बच्चों की तरह प्यार करता था। मैं उसके विवाह पर गया और उसे अशीर्वाद भी दिया। लेकिन पांच साल के बाद उसका पती मर गया। कुछ दिनों के बाद लड़की मेरे पास आई। मैंने सोचा की लोग कहते हैं कि जिस पर सन्त दया दृष्टि करते हैं और

प्यार करते हैं उसकी रक्षा होती है। तू इस लड़की को अपनी लड़कियों से ज़्यादा प्यार करता है। इसके विवाह पर तुमने इसको आर्शीवाद भी दिया तो फिर तेरे सत्तपने ने इसको विधवा होने से क्यों न बचाया। देखो मेरी बात को अगर ध्यान से सुनोगे तो तुम अपने जीवन को बना सकोगे। मैंने लड़की से पूछा कि बेटी ! सच बता। विवाह के बाद पती के बारे तुम्हारे कैसे विचार थे ? मेरी बात को सुनकर उसकी आखों में आंसू आ गये और कहने लगी कि पिता जी ! मैंने आपके सत्संग सुने हुये हैं। इसमें मेरा ही दोष है। पती के बारे मेरे विचार अनुकूल नहीं थे।

ऐ सत्संगियो ! मैं तुम्हारा भला चाहता हूं और तुमको सच्चाई बता रहा हूं। दूसरा उदाहरण सुनो। मैंने अपनी लड़की का विवाह किया। लड़का उस वक्त केवल B.A. पास था उसकी मां सुतीली थी। लड़का मामूली नौकरी करना नहीं चाहता था और उसकी सहायता भी कोई नहीं करता था। मेरी लड़की ने नौकरी करके अपने पती को L.L.B. कराया। कौन आदमी है जो अपनी लड़की के कष्ट को महसूस नहीं करता चाहे वह संत हो और चाहे संत का बाप हो। मैंने लड़की से कहा कि बेटी ! मुझे यह आशा नहीं

थी कि तू नौकरी करेगी और अपने पती को पढ़ायेगी। लड़की ने कहा कि पिता जी ! मैं जब कंवारी थी तो मेरे दिल में यह विचार आता था कि मैं किसी के अधीन नहीं रहूंगी और अपने पांव पर खड़ी होकर जीवन व्यतीत करूंगी।

यह भाषण मैं हजूर दातादयाल जी महाराज के ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए दे रहा हूं आप इसको कदर करें या न करें मुझे इस बात की परवाह नहीं है। मैं इस भाषण से यह सिद्ध करना चाहता हूं कि कर्म की जड़ तुम्हारी बासना है और यह कर्म का चक्कर ही गोरख धन्दा है। प्रकाश रूपी आत्मा एनर्जी है। जब देह में आता है तो मन चित बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं। आदमी क्योंकि अज्ञानी है और मन के चक्कर में आ जाता है और अच्छी और बुरी वासनायें पैदा करता रहता है इसलिए वह दुख और सुख आता रहता है। सन्त आते हैं और जीव को ज्ञान देते हैं। क्या ज्ञान देते हैं ? कि ऐ मानव ! यह काल का चक्कर है। तू प्रकाश में आ कर इस संसार में आ गया और माया के चक्कर में सफं गया। अब प्रकाश और शब्द का साधन कर

ताकि तू इस चक्कर से सदा के लिए निकल जाये। और अगर संसार में सुख से रहना चाहता है तो अपनी नीयत, अपनी वासना और अपनी आशाओं को ठीक रख। क्योंकि जैसी आशा वैसी बासा, जैसी करनी वैसी भरनी, जैसी मती वैसी गति और जैसा ख्याल वैसा हाल। मेरे विचार में मैंने बहुत अच्छी तरह समझा दिया है। अब अमल करना आपका काम है। क्योंकि आदमी अमल नहीं कर सकता इस लिए यह आवश्यक है कि पहले आदमी गुरु धारण करे। बच्चों को सत्संग में भेजो ताकि उनको यह पता लग जाये कि उन्होंने आशा कैसी रखनी है। सब से पहला धर्म क्या है ? बासना। अच्छी बासना रखो, कभी बुरा मत सोचो। अगर डरोगे तो डराये जाओगे। अगर चिन्ता करोगे तो चिन्ता और बढ़ेगी। यह है इस पिण्ड का हाल।

तो आज मैं जिस परिवार में गया उनको मैंने उदाहरण देकर यह बात समझाई कि बच्चों को अच्छा विचार दो। कंवारी लड़कियों को पारबती की पूजा बताई जाती है कि वे अपने मन को एकाग्र करके सच्चे दिल से यह प्रार्थना किया करें कि उनको

अच्छा घर और अच्छा वर मिले। यह संसार में जीने का भेद है। यह पिण्ड के बारे आपको बता दिया। अब ब्रह्माण्ड के बारे सुनो। उन्होंने तो पिण्ड का हाल शास्त्रों के अनुसार वर्णन किया और मैंने वर्तमान काल के अनुसार वर्णन किया है। सब कुछ हमारी आशा पर आधारित है। तभी तो मैं कहता हूं कि संतान को संतान के विचार से पैदा करो। आज कल *Uncalled For* संतान है। आप इस संतान से यह आशा नहीं कर सकते कि यह आप के लिए या देश के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। क्यों ? क्योंकि हमलोग संतान के लिए स्त्री के पास नहीं जाते। हम तो खुशी के लिए भोग करते हैं और जब बच्चा पेट में आ जाता है तो वह मां बाप के संस्कारों के अनुसार ही बनेगा। राष्ट्र को बनाने बाले मां बाप हैं, नेता नहीं। तुखम तासीर और सोहबत का असर ज़ाया नहीं होता। नेता ने या गुरु ने पैवंद लगाकर खट्टे को मीठा बनाना है वह संतरा हो जायेगा मगर उसकी खटाई फिर भी बाकी रह जायेगी। प्रभाव का नाश नहीं होगा।

देह में पाचों तत्व मिले, ठहरे निज स्थान।
इन चक्रों की देह है, कहते सन्त सुजान।

छटा चक्र शिव नेत्र है, पांचों का आधार।
पिंडी आत्मा तहां रहे, यह सिद्धान्त विचार।

छटा चक्कर क्या है ? मन चित बुद्ध अहंकार को इकट्ठा करके अपने मस्तिष्क पर ठहर जाना। यह आपको अमली जीवन बताता हूं। क्रोध की हालत में और प्रेम में मन इकट्ठा होता है उस हालत में अगर हम कुछ सोचते हैं या कहते हैं तो उसका प्रभाव ज़्यादा होता है। मैं नाम क्यों नहीं देता ? अभ्यास करने से आदमी की (Will Power) बढ़ जाती है और जो विचार उसके मस्तिष्क में होंगे वे भी बढ़ जायेंगे। ऐसे ही ऋषि और मुनि लोगों को शाप या वरदान दे देते थे जोकि पूरे हो जाया करते थे। इसी वास्ते मैं किसी को नाम नहीं देता कि लोग अभ्यास करके अपने लिए या दूसरों के लिए जो सोचेंगे उसका ज़्यादा प्रभाव होगा। आजकल लोगों मैं घृणा द्वेष और शत्रुता आम पाई जाती है, अभ्यास से ये चीज़ें और भी बढ़ जायेंगी और लोगों को अभ्यास से बजाये लाभ के हानि होगी। स्त्रीयें अभ्यास करती हैं और क्रोध में आकर अपने पति को और बच्चों को बुरा भला कह देती है उसका ज़्यादा प्रभाव होता है और उनको हानि हो जाती है। मैं आप लोगों को अ ली

जीवन का पाठ पढ़ा रहा हूं। मैं रामायण, गीता या कोई ग्रंथ तुमको नहीं पढ़ा रहा। सदा मन, वचन और कर्म को शुद्ध रखो और अभ्यासी को तो बिल्कुल ही होशियार रहना चाहिए। मैंने १९४२ के बाद किसी को नाम नहीं दिया। क्यों ? सुनो। जब्बलपुर की एक स्त्री त्रिकुटि में अभ्यास किया करती थी। लाल रंग के सूरज में मेरा रूप उसके अन्तर प्रगट होता था। वह मेरे पास फिरोज़पुर में आई और कहने लगी कि मेरे तीन बच्चे हैं वे मुझे तंग करते हैं और अभ्यास नहीं करने देते। आप मेरे पति से कहें कि वह इनको सम्भाले। वह बेचारा प्रातः ८ बजे काम पर जाता और रात को वापिस आता वह बच्चों को सम्भाल नहीं सकता था। मैंने उस स्त्री से पूछा कि तेरी मां, सास या नन्द है जो इनको सम्भाल सके ? नहीं। मैंने कहा कि जो कुछ तू चाहती है वह हो जायेगा। पण्डित वलीराम हकीम मेरे पास बैठे थे। मैंने उनसे कहा कि मेरा अनुभव यह कहता है कि इसके तीनों बच्चे मर जायेंगे। क्यों ? यह त्रिकुटि में अभ्यास करती है और चाहती है कि अभ्यास जारी रहे लेकिन बच्चे तंग करते हैं,

अभ्यास करने नहीं देते और कोई उपाय है नहीं। ९ महीने में तीनों बच्चे मर गये। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। यह मेरे जीवन की खोज है। उस समय मैंने किसीको यह नहीं बताया कि मैं नाम क्यों नहीं देता। क्यों ? संसार में तो गुरुओं और गद्दी पतियों ने यह प्रसिद्ध कर रखा है कि जितने आदमियों को नाम दो या नाम दिलवायो उतना ही ज्यादा पुण्य है। मैंने सोचा कि अगर मैं यह बात प्रकट करूंगा तो वे लोग जिन्होंने यह नाम दान रोज़गार का साधन बनाया हुआ है ये लोग मेरे विरूद्ध हो जायेंगे। कुछ समय बाद मैं आगरे गया और वहां से प्रेम बाणी लाया उसमें हज़ूर महाराज जी ने लिखा है कि जिनके मन गन्दे हैं और बे अपने गन्दे विचारों को रोक नहीं सकते या रोकना नहीं चाहते उनको शब्दयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए वरना उनका बहुत ही नुकसान हो जायेगा।

तो फिर उनको क्या करना चाहिए ? सार वचन नज़्म में लिखा है :-

भोजन थोड़ा खा तेरे भले की कहूं।
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूं।
कड़वा बचन मत बोल तेरे भले की कहूं।

पहले अपने मन को समझाओ। जब मन वैरागी हो जाये तो फिर साधन करो। सनातन धर्म भी यही कहता है कि अगर शूदर गायत्री मन्त्र सुन ले तो उसके कान में सिक्का भर दो, भाव यह है कि शूदर को गायत्री मन्त्र का जाप या साधन नहीं करना चाहिए वरना उसको हानि हो जायेगी। शूदर कौन है ? जिसका मन गन्दा है और जिसके विचार गन्दे हैं। एक ब्राह्मण भी शूदर हो सकता है और एक शूदर ब्रह्मण हो सकता है। इसीलिए मैं कहा करता हूं कि ये नाम दान देने वाले लोगों को नाम नहीं देते बल्कि विष देते हैं। हम अपने ग़लत विचारों के कारण दुखी होते हैं। किसीका विधवा हो जाना या बच्चों का मर जाना या कोई और विपत्ति का आ जाना यह सब हमारे अपने ही कर्मों का फल है। इस वास्ते मैं सदा यह कहा करता हूं कि घरों में शान्ति रखो। जिस घर में लड़ाई झगड़ा है वहां सुख कहां। यह अमली जीवन का पाठ है और मेरे निजी अनुभव हैं। मेरे भाई के तीन बच्चे मेरे पास पढ़ते थे। हम घर के नौ मैम्बर थे वेतन कम था और निर्वाह कठिन था। स्त्री झगड़ा करती थी कि भाई के बच्चों की पढ़ाई

का खर्च नहीं देता यद्यपि उसको काफी वेतन मिलता था। मैं जानता था कि मेरी स्त्री को इस झगड़े का दण्ड मिलेगा, पती को या लड़के को कोई कष्ट होगा। मैं अपना मकान बना रहा था तो मेरा दामाद आ गया और नक्शा देखकर कहने लगा कि पिता जी ! आप मकान ऐसा बनायें कि समय आने पर आपके दोनों लड़के बराबर २ बांट सकें। मैंने कहा कि शुकर करो अगर एक बच जाये। घर वालों ने मेरी वात का बुरा मनाया। दो साल बाद लड़का बिमार हुआ और काफी इलाज कराने के बावजूद भी बीमारी बढ़ती गई और लड़का मर गया। क्योंकि मैं अपने घर के विचारों को जानता था। इसलिए मैंने दो साल पहले भविष्य में होने वाली बात कह दी।

पिछले साल मैं यहां दसहरा पर आया और मेरे पास एक जोड़ा पती पत्नि आये। दोनों ने ही मेरे पास एक दूसरे की बहुत शिकायत की। मैंने कहा कि तुम्हारी इस लड़ाई का परिणाम यह होगा कि या तो तुम दोनों में से एक मर जायेगा और या तुम्हारा कोई बच्चा मर जायेगा। दो महीने बाद उनका बारह साल का लड़का मर गया। आप लोग सत्संग के लिए आये हो। सत्संग में क्या मिलता है ?

बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

मैं तुमको विवेक दे रहा हूं और जीने का भेद बता रहा हूं। मैं यह नहीं कहता कि गीता यह कहती है या रामायण यह कहती है या कुरानशरीफ या अमुक ग्रन्थ यह कहता है। मैं अपने निजी अनुभव बर्णन करता हूं। मैं वह कहता हूं जो मैंने स्वयं अनुभव किया है और मेरे साथ बीती है। इसलिए बार २ कहता हूं कि अपने घरों में शान्ति रखो वरना इसका परिणाम तुमको भुगतना पड़ेगा। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है चाहे कोई ऋषि हो या मुनि हो, पीर हो पैगम्बर हो, संत हो या परम संत हो। हमारी बासना ही तो कर्म है। मैंने तीन दिन आपको सुरत शब्द योग पर सत्संग दिये। वे तो संसार के चक्कर से निकलने के लिए हैं लेकिन तुम लोगों को तो इस चक्कर से निकलने की आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम लोगों को तो संसारी इच्छायें हैं। इसलिए आपको बता रहा हूं कि अपने कर्म का फल सब को भोगना पड़ता है। इस बारे में मैंने अपना उदाहरण दिया है। घर-घर में एक ही लेखा है लेकिन अगर दूसरों का उदाहरण दूं तो लोग नाराज़ होंगे। कर्म की

फिलोसफी बहुत प्रबल है । अपनी वासना को ठीक रखो पिछले कर्म तो भोगने ही पड़ेंगे भविष्य के लिए ध्यान रखो। दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि मेरे पास नौजवान लड़के लड़कियां स्त्री पुरुष आते हैं जिन्होंने समय से पहले अपना ब्रह्मचर्य खोया हुआ है उनके भाग में अशान्ति का आना लाज़मी है कोई रोक नहीं सकता । इसलिए बच्चों के चरित्र का ध्यान रखो । तुम देखो कि बच्चा जितना निर्बल होगा उतना ही ज़्यादा रोयेगा और जो बच्चा स्वस्थ है वह हंसता रहेगा । इसलिए सदा अपनी आशा ठीक रखो । मगर यहां आकर मेरा अनुभव फेल हो गया । कई बार हम चाहते भी हैं कि हमारे विचार शुद्ध रहें लेकिन यत्न करने पर भी ऐसा नहीं होता । क्यों ? क्योंकि मास्तिष्क पर संस्कार ही ऐसे पड़े हुये हैं। इसके लिये अपना ही एक उदाहरण देता हूं । मेरी लड़की पढ़ी लिखी और बहुत समझदार है । मुझे उसकी ओर से कभी कोई शिकायत नहीं लेकिन अगर उसकी मां कभी कोई बात उसे कहती तो वह अपनी मां के सामने बोलती और उसे जवाब दे देती। एक दिन मेरी स्त्री ने मुझसे कहा कि आप गुरु बन

कर लोगों को उपदेश करते हो लड़की को क्यों नहीं समझाते। मैंने लड़की से एक दिन कहा कि बेटी! तू अपनी माता के सामने बोलती है यह ठीक बात नहीं है। लड़की ने कहा कि पिता जी! जब माता जी मुझे कुछ कहती हैं तो मुझसे रहा नहीं जाता यद्यपि बाद में मैं बहुत पछताती हूं और रोती हूं लेकिन समय पर पता नहीं मुझें क्या हो जाता है यह मेरे बस की बात नहीं। अब सुनो कि ऐसा क्यों हुआ। मेरे सन्तान थी और सन्तान की इच्छा भी नहीं थी लेकिन फिर भी मैं कामातुर हुआ और आध घण्टा तक अपने मन से लड़ता रहा। आखिर मन मुझपर विजय पा गया। बच्चा पेट में आ गया। मुझे याद है कि मेरी स्त्री ने दो बार दवाई मंगवाकर खाई कि गर्भपात हो जाये। मगर न हुआ और यह लड़की पैदा हुई। अब आप यह बताओ कि जिस बच्चे को मां या बाप पहले ही नहीं चाहते या *Welcome* नहीं करते तो वे कैसे आशा कर सकते हैं कि उनका बच्चा उनका कहना मानेगा। अब वह लड़की कहती है कि पिता जी! मैं किसी बात का निर्णय नहीं कर सकती यह मुझमें बहुत कमी है। तो इस बात का जिम्मेदार कौन है? मैं हूं।

इसलिए ऐ इन्सान ! तू अपनी जिन्दगी को आप बना ।

रामायण, गीता, कुरान, ग्रन्थ या सार-वचन नज़म पढ़ने से तेरा कल्याण नहीं होगा । बाबा फकीर के गुण गाने से या फूल चढ़ाने से या मत्थे टैकने से या मन्दिर बना देने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा । सचाई ब्यान कर चला हूं । अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है। इस दुनियां में रोते हुए आये और रोते हुए जायेंगे । एक दिन यहां से चले जाना है ।

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं. ता दिन तेरे तन तखर के सबै पात झरि जैहैं ।
या देही को गर्ब न कीजै, सियार काग गिध खै हैं ।
तन गति तीन विष्ट किर्म ह्वै, नातर खाक उढ़ै हैं ।
कहं वह नैन कहां वह सोभा, कहं वह रूप दिखै है ।
जिन लोगन ते नेह करतु है, ताई देखि घिनै है ।
घर के कहत सवेरे काढ़ो, भूत होत धरि खै है ।
जिन पूतन को वहु प्रति पाल्यो, देवी देव मनै है ।
तेइ लै बांस दियो खोपरी में, सीस फोरि बिखरै है ।
अजहूं मूढ़ करै सत संगत, संतन में कछु पै है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन नसै है ।

मैंने आपको तीन सत्सगों में यह बताया है कि तुम इस चक्कर से कैसे निकल सकते हो ? पहले तो

आदमी को यह यकीन हो जाना चाहिए कि अन्तर में जितने रंग रूप आते हैं यह सब माया है। अगर यह यकीन नहीं है तो वह लाख भक्ति करे, जप तप करे या साधन करे अन्त समय पर उसके सामने फिल्म चलेगी। जब तक वह फिल्म को सत मानेगा तो उस फिल्म के मुताबिक उसको दूसरा जन्म मिलेगा। और अन्त मता सो गता के अनुसार उसका आवागमन का चक्कर खतम नहीं होगा। मुझ पर तो आप लोगों की दया हो गई, केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और मेरे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया हैं। मैं इस मन से ऊपर निकल गया। मरते समय कोई कहता है कि धर्भ राज आता है या यमराज आता है। मेरा अनुभव कहता है कि वह तुम्हारा अपना ही मन है। मुसलमान कहते हैं कि मुनकर और नकील आते हैं। अरे! कितनी बड़ी दुनियां है और कितनी दुनियां मरती है खुदा के पास कितने मुनकर और नकील हैं। कोई यमराज आदि नहीं, सब तुम्हारे ही ख्यालात और संस्कार शकल बना कर तुम्हारे सामने आते हैं। ये ज्ञान मुझे आप लोगों से मिला, लोग मरते हैं,

कहते हैं कि बाबा जी आये, लेकिन मैं तो कहीं जाता नहीं। तुम्हारे गन्दे ख़्यालात ही यमराज हैं और अच्छे ख़्यालात धर्म राज हैं। मैंने एक किताब गरुड़ पुराण लिखी है उसमें मैंने सब कुछ लिखा है। जब तक सत्संग करके तुमको मन के रूप की समझ नहीं आयेगी, तुम्हारा मन यमराज और धर्म राज बन कर तुमको डराता रहेगा। ये मेरे अनुभव में आया है। मैंने जो कुछ समझा है वह तुम लोगों से ही सीखा है। हज़ारी सिंह के चाचा के फोड़ा था, उसका ओपरेशन हुआ और वह बेहोश हो गया, $1\frac{1}{2}$ घण्टे के बाद होश आयी, तो कहने लगा कि हज़ारी सिंह ! तुमने मुझे बचा लिया। कैसे ? कहने लगा कि मैंने देखा कि दो आदमी मुझे पकड़ कर ले जा रहे हैं, आगे एक काले रंग की बहुत लम्बी चौड़ी औरत रूहों को खा रही थी। मैं डर गया, कि अब ये मुझे भी खा जायेगी। मैंने उन आदमियों से कहा कि हज़ारी सिंह को बुला दो। तुम आ गये, मैंने तुम से कहा कि बाबा जी को बुलादो वरना ये मुझे खा जायेगी। बाबा जी आ गये, और उन आदमियों से कहा कि इसको छोड़ दो। तुम इसको नहीं ले जा सकते और उस

औरत से कहा कि यह मेरा जीव है तुम इसको नहीं खा सकती ।

अब तुम सोचो कि मैं गया था ? नहीं । यह सब उसके अपने ही गन्दे ख्यालात थे, जो उसको डराते थे और चूंकि उसने हज़ारी सिंह से मेरी बाबत सुना हुआ था और वह ख्याल उसके दिमाग में था इसलिए मेरा रूप उसके अन्तर प्रगट हुआ। तो मलिक साहब ! प्रकाश और शब्द को पकड़ो, ताकि तुम्हारे सामने प्रकाश और शब्द आ जाय और तुम चक्कर से या गोरख धन्धे से बच जाओ। वरना अगर बाबा फकीर या कृष्ण या राम आगया तो दोबारा चक्कर में आना पढ़ेगा । मैं अपनी डयूटी पूरी कर देना चाहता हूं । मैं तुम लोगों को बाबा फकीर के जाल में नहीं फंसाना चाहता । जब तक अन्त समय तुम्हारे सामने प्रकाश और शब्द नहीं आयेगा, तुमने चाहे किसी की भी भक्ति क्यों न की हो, तुम आवागमन से निकल नहीं सकते ।

देखो ! महाराज दशरथ ने राम चन्द्र जी की जूदाई में राम का सुमिरन करते हुए प्राण त्यागे और कितने ही आदमी राम २ करते हुए मर जाते हैं ।

रामायण में लिखा है कि जब राम चन्द्र जी ने रावण को मारा तो देवता राम चन्द्र जी के पास आये और उस समय महाराजा दशरथ भी स्वर्ग से राम चन्द्र जी के पास आये। अब आप सोचो कि अगर राम २ कहने से महाराजा दशरथ मुक्त हो गये होते तो वो फिर कैसे आ जाते। हां अगर अन्त समय पर राम या कृष्ण या बाबा फकीर या कोई और गुरु आ जाता है तो तुम यमराज से बच जाओगे और अच्छा जन्म मिलेगा मगर आवागमन खतम नहीं होगा। और या जिसको तुमने गुरु माना है उस रूप को प्रकाश या शब्द रूप मानो तो मैं दावा तो नहीं करता मगर मेरा अनुभव है कि तुम आवागमन से निकल जाओगे क्योंकि तुमने इस रूप को सणगुं रूप नहीं माना बल्कि निराकर रूप माना है। इसलिए अपना २ इष्ट पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म रखो, मरते समय आदमी के पास संख, घड़ियाल या १० दिन तक चिराग़ जलाया जाता है क्योंकि मरने वाले को संस्कार और ख्याल दिया जाता है कि तेरा और हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, तू अपने आदि घर को जा, इस चक्कर से निकल जा।

जा दिन मन पंछी, उड़ि जैहै।
अजहूं मूढ़ करे सत्संत, संतन में कछु पैहै।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन नसै है।

लेकिन मैं कहता हूं कि अजहूं मलिक प्यारे, कर सतसंगत, उन्होंने तो मूढ़ कहा है लेकिन मैं तो मूढ़ नहीं कहता मैं तो कहता हूं कि अजहूं मलिक प्यारे, कर सत-संगत। क्योंकि सन्तों की संगत से तुमको समझ, ज्ञान, विवेक मिलेगा, इसके सिवाये यदि सन्तों से कुछ और आशा रखते हो, तो तुम मूर्ख हो। जो कुछ तुमको मिलता है वह तुम्हारे ही कर्म और तुम्हारे ही विश्वास का फल मिलता है। जो कुछ मैंने सन्तों से पाया वह आप लोगों को बता दिया। बाबे फक़ीर को इष्ट मानने की बजाय प्रकाश और शब्द को अपना इष्ट बनाओ। और यदि प्रकाश और शब्द नहीं खुलता तो जो रूप तुमने बनाया है उसको पूर्ण मानो। किसी को धोके में मैं नहीं रखना चाहता। तुमको सचाई ब्यान कर रहा हूं। अगर अन्त समय बाबे फकीर का रूप तुम्हारे सामने आ जायेगा तो तुम जमराज से तो बच जाओगे, मगर आवागमन से नहीं बच सकते। यह बिल्कुल सचाई है। अगर मुझे राधास्वामी मत में सचाई न मिलती तो मैं भी इसका ऐसे ही खंडन

करता जैसे उन्होंने मेरे पूर्वजों का किया है। हजूर महाराज जी ने अपनी प्रेम वाणी में साफ लिखा है कि अन्त समय जीवों के सामने फिल्म चलती है, जिस गुरु से नाम लिया हुआ होता है वह गुरु भी आ जाता है, शब्द भी सुना देता है, फिर उस जीव को ऊपर के लोकों में रहना पड़ता है, वहां गुरु के दर्शन और सत्संग भी मिलता रहता है फिर जब कोई संत सतगुरु वक्त संसार में आता है तो वह जीव भी जन्म लेकर उसके सम्पर्क में आ जाता है और बाकी की कमाई पूरी करके अपने आद घर पहुंच जाता है। मुझसे बाकी की कमाई पूरी नहीं होती थी, तुम लोगों की दया से मैंने इसे पूरा किया। मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है क्योंकि मैं नहीं होता, इसलिए मैं बिलकुल सच्चाई ब्यान किये देता हूं कि मैं कभी नहीं गया। ऐसे ही दूसरे संतों का रूप भी लोगों के अन्तर प्रगट होता है लेकिन किसी भी संत ने यह नहीं कहा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता अगर किसी ने कहा भी तो सैन बैन मैं, जिसको दुनियां समझ न सकी। सन्तों के पास यही एक लोहे का परदा था जिसकी बजह से सन्तों ने गृहस्थियों

को लूटा। अपने डेरे बनाए, मोटरें खरीदीं, हवाई जहाज़ खरीदे और *Air Conditioned* कोठियां बनवाईं और हम भोले भाले अज्ञानियों के अज्ञान का नाज़ाइज़ फायदा उठाया। इस लिए मैं अनामी धाम से फकीर के चोले में आ कर सच्चाई की घोषणा कर रहा हूं। मैं कई बार सोचता हूं कि फकीर ! तुम अपने आप को सन्त सत्गुरु कहते हो, क्या तुम किसी को कुछ दे सकते हो ? हां मैं सच्ची समझ और सच्चा ज्ञान दे सकता हूं। लोग गायत्री मंत्र का जाप करते है लेकिन उनको यह पता नहीं कि गायत्री है क्या ? गायत्री है तीन प्रकार का गाना। घंटा, शंख और मृदंग। जब ये गाना पूरा हो जाता है तो आदमी की दृष्टि, सुरत ओं के विन्दु पर पहुंच जाती है। केवल मुंह से ही गायत्री मन्त्र या राधास्वामी २ या राम २ की रट लगाने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। अगर तुम से यह नहीं होता तो इससे भी आसान तरीका यह है कि जिसको तुमने अपना इष्ट माना हुआ है उसको पूर्ण मानो, और उसके रूप में मालिके कुल को मानो। अगर तुमने यह समझ लिया है कि गुरु मर गया है तो तुमने गुरु

धारण नहीं किया। गुरु न मरता है न पैदा होता है वह तो इष्ट है। अगर तुमने ऐसा माना हुआ है तो फिर अगर शब्द या प्रकाश नहीं भी खुला, मगर तुमने किसी मेरे जैसे आदमी का सत्संग सुना हुआ है तो जब तुम्हारा आखिरी समय आवेगा तो जो रूप रंग तुम्हारे सामने आयेंगे, तुम उनको माया समझ कर छोड़ दोगे। फिर जाओगे कहां ? प्रकाश और शब्द में और इस चक्कर से वच जाओगे। अगर यह यक़ीन हो जाय कि यह रूप रंग सब माया है तो जिन्दगी में यदि साधन नहीं भी हुआ तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि अन्त समय पर जब फिल्म चलेगी और रूप रंग जब तुम्हारे सामने आवेंगे तो उनको माया समझ कर तुम उस तरफ दृष्टि नहीं दोगे और ऊपर चले जाओगे और आवागवन से बच जाओगे। स्वामी जी ने माया सम्वाद में लिखा है कि माया कहती है कि महाराज ! आप ने रास्ता बिलकुल साफ कर दिया, अगर जीव आपके हैं तो मैं भी आप की ही हूं। स्वामी जी फरमाते हैं कि सुन माया ! तू मेरे जीवों को नहीं ले जा सकती। वह सीधे सतलोक जायेंगे। क्योंकि स्वामी जी ने यह राज़ बताया है कि सहस दल

कंवल, त्रिकुटी वगैरा सब तुम्हारा ही मन है और माया है इसलिए जब तुमको यह यकीन हो जायेगा कि यह सब माया है तो फिर आप आगे निकल जाओगे। इसी वास्ते मैं कहता हूं कि मैं तुम लोगों को सतलोक ले जाऊंगा बशर्तेकि तुम मेरी सेवा करो। मेरी सेवा क्या है? मेरी बात को सुनो, समझो और उस पर अमल करो। दीवानो! अगर रुपया देने से कोई तर जाता तो यह बड़े २ अमीर लोग रुपया देकर तर जाते। यह रुपया देने का मजमून नहीं है। गुरु भक्ति क्या है? सुनो!

दर्शन करै वचन पुनि सुने, सुन २ कर फिर मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेई तिस सारा, काढ़ि सार तिस करे अहारा।
करि अहार पुष्ट हुआ भाई, जग, भव, भय सब गई गवाई।

बिबो! २५ रुपये माहमार देने से तेरा बेड़ा पार नहीं होगा जो दोगे वही मिलेगा, प्रेम दोगे तो प्रेम मिलेगा, नफरत दोगे तो नफरत मिलेगी और गाली दोगे तो गाली मिलेगी। ये तो संसार का व्यवहार है। इसलिए मैं नहीं कहता कि तुम न दो, लेना देना संसार का व्यवहार है।

जा के गुरु के पास बैठो, और बचन उनके सुनो।
जो सुनो उसको विचारो, जो विचारो वह गुनो।
सुन के गुन के नित करो, वचनो को उनके तुम आहार।
पुष्ट होकर साधना से, करलो तुम साक्षातकार।
गुरु की संगत बिन नहीं, अधिकार होता ज्ञान का।
जब तलक संगत न हो, मिटता नहीं मद मान का।
मान मद अभिमान मन मत के सभी समझो विकार।
मानी अभिमानी को कब सूझे, सार और असार।
राधास्वामी योग सीखो, जो सहज है और सुगम।
जीते जी पा जाओ मुक्ति, और बनालो निज जनम।

मलिक साहब ! मैंने आपके सवाल का जवाब दे दिया है अब आप की बहादुरी यह हूं कि बाकी जिन्दगी अपने अन्तर चलो। गुरु तुम्हारे घट में रहता है। होशियारपुर में नहीं रहता, होशियारपुर वाले की यह डयूटी है कि वह तुमको यह यकीन करा दे कि जो कुछ है वह तुम्हारे ही घट में हैं।

घर में घर दिखलायदे, सो सत्गुरु पुरुष सुजान।

यह बाहर के गुरु की महिमा है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा है कि :-

काहे बौराना हाय फकीरवा !
तेरे घट में माल खजाना, भया दीवाना, हाय फकीरवा।

जाकी चाह में खोजत डोले, मन में समाना हाय फकीरवा।
तीरथ वरत सभी तेरे भीतर, नहिं कहिं जाना
हाय फकीरवा।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, नित गुन गाना
हाय फकीरवा।

उन्होंने मुझे यह काम इस लिए नहीं दिया था कि मैं गुरु बन कर तुम लोगों को अपने पीछे लगाऊं यह काम मुझे मेरे ही कल्याण के लिए दिया था। उन्होने मुझे हुकम दिया था कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना? मुझे पता नहीं कि जो कुछ मैंने किया है या कहा है यह ठीक है या ग़लत है, मैंने जो समझा और अनुभव किया, वह कहता रहता हूं। तुम लोग आये हो मेरे पास शुभ मावना है और सच्चा ज्ञान है। जो मैंने अनुभव किया है वो मैं देता हूं। इसके सिवा मेरे पास और कुछ नहीं है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि तुम लोगों को खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा, रहने को मकान और मन को शान्ति मिले और जो निर्वाण चाहते हैं उनको निर्वाण मिले। अगर मेरे ख्याल में कोई ताकत हैं और होनी चाहिए तो तुम यकीन रखो कि तुम्हारे

काम हो जायेंगे। मैंने कोई परदा नहीं रखा।

तू सच्चा है मुझे सच्चाई, बख्श २ सतगुरु प्यारे।
तू प्रकाश है तेरी दया से. प्रगटे घट रवि शशि तारे।

ये हजूर दाता दयाल जी महाराज से मेरी प्रार्थना है। दोस्तो! आज अंतिम सत्संग है, कल को अमरीका जाऊंगा। बेटी प्रेम लता! तू आयी है S.P. साहब की औरत है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि तेरे सन्तान हो जाय। मैं शुभ भावना देता हूं।

तू दाता है दान दे मुझको, नाम रतन धन का स्वामी।
मेरे मन में आके समाजा, जो तू है अन्तर्यामी।
तू है ज्ञान ज्ञान दे मुझको दे, मेट तिमिर अज्ञान मेरा।
तेरे रूप का दर्शन पाऊं छिन प्रति छिन रहे ध्यान तेरा।
तू सत है अपनी सत्ता, दे जीवन मेरा सुधर जावे।
तू चित है निश्चल कर चित को, निश्चत ज्ञान मुझे भावे।
सत चित आनन्द रूप है तेरा, दे आनन्द मुझे सत्गुर।
नाम रूप के तेरे सहारे, जीते जी जाऊं सतपुर।
राधास्वामी परम पुरुष करतारा, तू दुखियों का सहारा है।
दुख दरिद्र को मेट दे मेरे, दुख दायी, संसारा है।
चरण शरण की ओट गहूं में, आनन्द मंगल साज सजूं।
राधास्वामी राधास्वामी हित से सुमिरूं, राधास्वामी नित भजूं।

सब को राधास्वामी।

शब्द

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़ ।

राधा स्वामी ! जल के वहाव से शब्द पैदा होता है । भूंचाल से शब्द होता है । हवा भी शब्द करती है, आग से भी शब्द हुआ करता हैं । शब्द अकाश का गुन है, शब्द सर्वव्यापक है. शब्द प्रत्येक जगह मौजूद है जहां हरकत है वहां शब्द होगा । सृष्टी में हरकत है, सृष्टी हरकत से पैदा होती है । हर एक जीव जन्तु शब्द करता है, जन्म लेते समय वच्चा रोता है यानीं शब्द पैदा करता है तो समझ लिया जाता है कि वच्चा जिन्दा हैं । अगर बच्चा शब्द न करे तो वच्चा मुर्दा समझा जाता है । शब्द में जिन्दगी है शब्द से जिन्दगी मिली लेकिन शब्द २ में अन्तर है । जैसा शरीर वैसी आवाज़ जैसा गला वैसा स्वर: हर एक जीव जन्तु पक्षी की अवाज़ अलग २ है । एक दूसरे से मिलतो नहीं है । किसी पक्षी की आवाज से इन्सान आनन्द लेता है किसी की आवाज से भाव शेर की आवाज से खौफ आता है, डर लगता है । कोई इन्सांन गाना

सुन कर मस्त हो जाता है, समाधि लग जाती है। अन्तर्ध्यान हो जाता है। वहादुरी का गाना सुनकर जंग के लिये तैयार हो जाता है, प्रेम का गाना सुनकर प्रेमी वन जाता है। भक्ति और शान का रांग सुनकर भक्ति और शान की बातें करने लग जाता है। वैराग्य का राग सुनकर दुनियां छोड़ने को तैयार हो जाता है। लेकिन स्थिरता नहीं आती। टिकाव नहीं आता, स्थिरता और टिकाव का सम्वन्ध दिल से है।

शब्द शब्द सब कोई कहे, शब्द के हाथ न पांव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव।
कुटिल वचन सवसे वुरा, जार करे सव छार॥
साधू वचन जल रूप है, जैसे वरसे अमृत धार॥

बीन के शब्द पर सांप मस्त हो जाता है खुशबू पर हिरन, मोर अपने नांच पर, बुलबुल चमन पर, कुता काम पर, इन्सान में ये सव गुन हैं। भेंस के आगे बीन का क्या मतलव, मोर के नांचने को कोई पक्षी नहीं देखता, इस लिए सवाल पैदा होता है कि क्या हर ऐक इन्सान मन्दिर में घण्टे और शंख की आवाज से आनन्द लेता है, नहीं। मुसलमान इसे पंसन्द नहीं करते। वह शंख और घण्टे के शब्दों के गुन से जानकार ही नहीं हैं। सुबह और शाम जव

मन्दिरों में घन्टे और शोर का शब्द होता है कितने सज्जन हैं जो इसके सुनने के शौकीन हैं। जो ध्यान से एकाग्र होकर सुनते हैं वह इनके शब्दों में आनन्द लेते हैं। क्या आपने कभी इनकी ध्वनि पर दिल लगाया, दिल एकाग्र किया, और ध्वनि के साथ मेल पैदा किया यानीं इस ध्वनि में इन शब्दों में दिल दिया, यानीं घण्टे और शंख के शब्द सुनने से मस्ती आयी, अगर जवाव हां है तो आप मुबारिक, आपकी हस्ती मुबारिक, चले चलो, लगन रहे सच्चाई के साथ तो गुरु दर्शन देंगे। आपका कदम आगे वढ़ेगा कामयावी आपके कदम चूमेगी।

अगर जवाव नहीं में है और आप संत मत के पंथाई हैं, अभ्यासी हैं और अन्तर में शब्द खुला हुआ है तो अपने दिल से पूछो कि घण्टे और शंख के शब्द ने आप पर क्या असर किया ? इसके अभ्यास का क्या लाभ हुआ ? अगर अन्तरी शब्द सुन भी लिया तो क्या हुआ ? क्या आप की ज़वां में मिठास आई ? क्या दूसरों के गुनाहों को माफ करना सीख लिया ? क्या सहन करने का मादा बढ़ा ? क्या आप की जिन्दगी ने पल्टा खाया ? क्या आप की जिन्दगी में

कोई वहतरी आयी ? क्या आप निन्दा से परहेज करना सीख गये ? क्या कभी कोई नेक काम किया ? अगर जवाव ना में है तो अफसोस है तो समझ लो कि आप ने गुरू का सत्संग किये वगैर साधन किया । अन्तरी साधन के लिए गुरु का सत्संग जरुरी है । यानीं लाजमी है ।

अन्तरी शब्द दो प्रकार के है। एक वर्णात्मक दूसरा धुनात्मक । वर्णात्मक वह शब्द हैं जो जबां से वोले जाते हैं जैसे :- हरे राम हरे कृष्ण, वाहेगुरु वगैरा २ । धुनात्मक शब्द वह हैं जिनकी केवल धुन सुनी जाती है जवान से पुकारे नहीं जाते जैसे:- घंटे की आवाज । इसको टन २ कह कर समझाया जाता है । हांलाकि टन २ घंटे की आवाज नहीं है । ओं २ यह ओं से मिलती जुलती है या वादल की गरज से हांलाकि यह वादल की गरज नहीं है ।

शरीर जड़ पदार्थ है उसकी अपनी कोई हस्ती नहीं है । यह पांच तत्वो के मिलाप से वना है, शरीर में हरकत नहीं है इस लिए जड़ है, शरीर में सोचने की शक्ति नहीं, शरीर मन का गुलाम है । मन का हुकम मानता है, शरीर का हर एक अंग पैर, हाथ,

जवां, आंख, नाक, कांन, वगैरा मन के इशारे पर चलते हैं। मन मिलौनीं से पैदा हुआ। जव सुरत की धार शरीर में दाखिल हुई एक चेतन शक्ति पैदा हुई, इसको मन कहते हैं। शारीरिक और सांसारिक सब काम मन करता है। पाप और पुन्न, अच्छे और बुरे कर्म मन करता है और इनके फल भोगता है। मन की पांच कलाएं हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार। मन इन वासनाओं में फसां हुआ स्वाद लेता रहता है। जब मन संसारी स्वादों से उदास हो जाता है, सब भोग भोग चुकता है तो मन को वैराग्य आ जाता है मन शान्ति चाहता है। इस शान्ति को पाने के लिए अन्तरी साधन करता है। आपने आप को इकट्ठा करता है। मन का स्थान दोनों आंखों के मध्य में है। वाहरी आंखों के वन्द कर लेने से एक तीसरी अन्तरी आंख खुल जाया करती है जिस को शिव नेत्र कहते हैं। इस मुकाम पर मन को इक़ट्ठा करने से सब किसम की वासनांए और दवी हुई वासनांए उभर आती हैं। जीव जव इन वासनांओं को इस मुकाम पर इक्ट्ठा करता है तो वासनाओं के इक़ट्ठा होने की वजह से शव्द पैदा होगा। हरकत मे शव्द

है क्यों कि वासनाओं में पांच तत्व मौजूद होते है। इस लिए घंटे और संख की आवाज सुनाई देगी इस को सहसराकार कहते हैं। सहस दल कंवल हजारों पंखड़ियों वाला फूल। यहां पर मन की हजारों किसम की वासनांए एकाग्र होती है इस लिए अभ्यासी को यहां खवरदार और होशियार रहना चाहिए। जो चाह लेकर साधन करेगा वह इच्छा धनी हो जायेगी। इस लिए सतगुरु का सत्संग अभ्यासी के लिए अति जरुरी है, वरना खतरा है।

इस मुकाम पर तीन नाड़ियां ऊपर को गई हैं इनके नाम हैं इगंला, पिगला और सुष्मन्ना। नाड़ियां अलग २ काम करती हैं जैसे :-कान सुन सकते हैं लेकिन देख नहीं सकते। हरएक इन्द्री का अलग २ काम हैं। इसी तरह से जब मन इंगला नाड़ीं में निवास करेगा तो भलाई के शुभ काम करेगा। अगर मन पिंगला में चला गया तो वुरे काम करने लग जायेगा, अगर जीव की परमार्थिक दृष्टि है तो सुष्मन्ना नाड़ी में प्रवेश कर जायेगा और घंटा और शंख का शब्द सुनाई देगा। ये आप स्वयं इस वात का अनुमान लगा सकते हैं कि आप का मन किस

स्थान पर वैठा है। अगर मन काबू नहीं आता तो अभ्यास छोड़ दो, सुमिरन करो ऊंची २ आवाज से कोई भजन गाओ।

कुछ अरसा के लिए इस मुकाम पर अभ्यास करो इसको सहज साधन कहते हैं। यह साधन विना तकलीफ के, वगैर कष्ट के आराम से सहज से किया जाता है। सुमरिन ध्यान और भजन इक्ट्ठे भी किये जा सकते हैं। अलग २ भी हो सकते हैं। सुमिरन और ध्यान तो हर एक जीव कर सकता है। लेकिन भजन उस जीव को करना चाहिए जिसने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का ब्रत धारण किया हुआ है वरना भजन करना खतरे से खाली न होगा। इस तरीके को वो अपनाये, जिसको वैराग्य हो चुका है और आवागमन से छुटकारा पाने की चाह रखता हो।

जब एकाग्रता हासिल हो जाय, शब्द खुल जाय, ध्यान शक्ति से अपने इष्ट देव की मूर्ती को अपने अन्तर प्रकट करलो। मूर्ती धीरे धीरे प्रकाश बान होती जायेगी। अपने साधन की वात किसी से मत करो, अपने गुरु को बताओ, इनकी रहवरी में साधन होना चाहिए।

साधन में मन की यह हालत होने लगेगी कि वह महसूस करने लगेगा कि वह हैं, इसका गुरु, है, इष्ट देव है और साधन है। केवल तीन चीजें रह जायेंगी। जब मन की ऐसी एकाग्रता हो जायेगी तो ओं २ का शब्द सुनाई देगा और लाल सूरज। यह त्रिकुटी का स्थान है।

यह सब मन के स्थान हैं। मन इन स्थानों पर बैठ कर एकाग्र हो कर तरह २ के शब्द सुनता है। जैसा स्थान वैसा ही शब्द होगा, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा ये सब मन के स्थान हैं लेकिन मन जब मगन हो जाता है तो सुरत का गलवा हो जाता है क्यों कि जब तक मन कायम है वासना रहेगी। जीव वासना रहित नहीं हो सकता।

सुरत में वासना नहीं है। सुरत अडोल है, जब मन को छोड़ कर सुरत सत पद में कायम हुई तो शब्द प्रकट हुआ, इसको सार शब्द कहते हैं। सार शब्द के ग्रहण करने से आवागमन समाप्त होगा।

जिन ये शब्द पहिचानिया ताका सरिया काज ॥
शब्द शब्द बहु अन्तरा सार शब्द चित दे ॥
जा शब्द साहिब मिले, सार शब्द कहिले ॥

साहिब का मतलव यहां पर शान्ति है। सार शब्द सिलसिलेवार है टूटता नहीं, इसमें लय नहीं है। न मध्यम न तेज एक सार।

ध्यान योग

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब (चन्दीगढ़)

राधास्वामी ।

यह सच्चाई है हकीकत है कि जब तक इन्सान किसी गैर की, किसी दूसरे की उपासना करेगा, मोक्ष पद को प्राप्त नहीं कर सकता है । इसको अवागमन से छुटकारा नहीं मिलेगा । इसलिए ऐ जीव ! तू किसी गैर की उपासना मत कर । मतलब कि जिस किसी की उपासना करता है इसको अपनी ही ज़ात समझ, अपना निज स्वरुप जान । तेरी इसी में मुक्ति है । कबीर साहिब फरमाते हैं:-

कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त,
आन उपासक कृत्घन, तरे न नाम रटंत ।

सब इस भवसागर से पार जा सकते हैं लेकिन दूसरे की उपासना करने वाला और कृत्घन नाम के जाप से भी मोक्ष नहीं पा सकता है । इस लिए कहा गया है :-

सूरत धारण कर लेता है और घरोने मं छेद करके उड़ जाता है। यह है ध्यान शक्ति की विचित्र लीला।

गुरु और पारस में यह अन्तरो जान।
पारस लोहा कंचन करे, गुरु कर ले आप समान।

ध्यान शक्ति से, गुरु शिष्य को अपने जैसा बना लेता है। कीट भृंगी बन जाता है। कबीर साहिब फरमाते हैं।

सुमिरन से मन लाइये, जैसे कीट भृंग,
कबीर बिसारे आपको, हो जाय तेही रंग।

ध्यानी की इतनी एकाग्रता हो जाती है कि इष्ट देव की मूर्ति लोप हो जाती है। गुरु मूर्ति तो ध्यानी ने अपनी शक्ति से प्रगट की थी! ध्यानी की शक्ति का यह एक चमत्कार है। फिर मूर्ति गैर की कैसे हुई यह तो ध्यान की अपनी मूर्ति थी। इसके अन्दर थी हां संस्कार बाहिर से लिया गया था। इसलिए यह कभी न सोचना कि जो मूर्ति अन्दर प्रगट होती है वह किसी गैर की है। वह मूर्ति मालिके कुल की है। ऐसा मान लेना ठीक है। जब ध्यानी ध्यान में लय हो जाता है, तो ध्यान का ख्याल जाता रहता है, तो प्रकाश प्रगट हो जायेगा। ऐसा प्रकाश जिस के स्रोत का पता नहीं लगेगा हां, प्रकाश है। ध्यानी को

ध्यान कहां ले गया। गुरु मूर्ति का स्थूल ध्यान कैसा रंग लाया ? शुरू और आखिर के ध्यान को देखें।

जब एकाग्रता बढ़ जाती है तो इष्ट देव की मूर्ति अन्दर प्रगट होती है। किसी ध्यानी की जल्दी किसी की देर से मूर्ति प्रगट होती है। कोई चीज़ अन्धेरे में नज़र नहीं आती। जब मूर्ति अन्दर प्रगट हुई तो मान लेना होगा कि वहां प्रकाश था। तभी मूर्ति नज़र पड़ी। मूर्ति के साथ २ प्रकाश भी होता है, बल्कि मूर्ति प्रकाशमय हो जाती है। ध्यान को ज्यादा एकाग्र करने से प्रकाश ही प्रकाश रह जायेगा। मूर्ति लोप हो जायेगी। लेकिन जब तक दुनियां का कारोबार करते हो मूर्ति का ध्यान नहीं छोड़ना चाहिए। वरना दुनियां बिगड़ जायेगी।

ध्यान की विधि किसी शब्द सनेही सतगुरु के सतसंग से मिलेगी। जब अपने गुरु से प्रेम बढ़ जाता है, ध्यान आसानी से बन जाता है। प्रेम पहली सीढ़ी है। यह मार्ग प्रेम का मार्ग है। केवल प्रेमीजन ही ध्यान कर सकते हैं। प्रेमी कहता है। एक बार आये तो आंख झोंप तोहे लूं। न मैं देखूं और को न तोहे देखन दूं। शब्द सुनिये :-

अब मैं गुरु से नेह लगाऊं।
करूं हाथ से गुरु की सेवा, सतसंग चलकर जाऊं।
जिभ्या से गुरु नाम का सुमिरन, मूर्ति हृदय में बसाऊं।
घर में दरस परस सतगुरु का, घट में तारी लगाऊं।
घट में भजन ध्यान निस बासर, घट में ज्योति जगाऊं।
करूं आरती घट हित चित से, मंगल साज सजाऊं।
स्तुति करूं उमंग प्रेम से, राग सुहावन गाऊं।
आंख, कान जिभ्या रस त्यागूं, अमी भोग नित खाऊं।
बाहर के पट देकर सजनी, अन्तर के खुलवाऊं।
गुरु का रुप लगे अति प्यारा, देख न पलक झपाऊं।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु को आज रिझाऊं।

सबको राधास्वामी !

मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आखों का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/- रुपया की धन राशी प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा की ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको बचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी। वह तलाश मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिए मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब मैं पंथ में आया था और मैंने भी यह प्रण किया था कि अपना

घर का जन्म है। ब्राह्मण के लिए वेद बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इस की कोई कीमत नहीं रखी। रात को सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा ? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की आत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा-फेरी नहीं होती। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिन की रुची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी जिन्दगो को बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था । मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या ग़लत है । मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझे ले चल । अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **THE SECRET OF SECRESTS**
   Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj.

2. अनुभवसार (हिन्दी) दूसरा प्रकाशन
   लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रसड़ा ।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी)—मासिक पत्रिका ।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

नोटः-(१) हमें सिर्फ पता दें अगर आपका पता (*Address*) बदल जाये !

(२) पत्र-व्यवहार समय अपना मेम्बर शिप नं० अवश्य लिखें !

शुभ सूचना

जनता को यह जान कर खुशी होगी कि

मानवता फ्री आई और एलोपैथिक हस्पताल मानवता मन्दिर

में

15-9-76

से हर तरह की बच्चों की

V A C C I N A T I O N

शुरू की जा रही है।

P O L I o,
T R I P L E,
B. C. G.,
S M A L L P O X
E T C.

अधिकारी लोग लाभ उठा सकते हैं।

समय : प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक
शाम $4\frac{1}{2}$ बजे से 6 बजे तक

सैक्रेट्री
मानवता मन्दिर
सुतैहरी रोड, होशियारपुर

FORM IV

(See Rule 8

Place of Publication	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Publisher's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Editor's Name	**Seth Durga Dass**
Nationality	**Indian**
Address	**House No. 2, Sector 19—A Chandigarh.**
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, M.R. Bhagat hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

Signature of Publishers

Dated . 10.9.76

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpur.

Regd. No. 26265/74

MANAV MANDIR **P—Hsp—7.**

93.

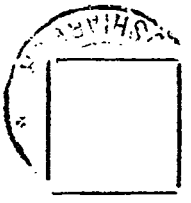

ADDRESS

To

Sh. Hanmonth Rao

H-No. 10-3-194/8

Humayan Nagar

Hyderabad

500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR

SUTEHRI ROAD,

HOSHIARPUR.